Manuscript'

श्रीरघुनाथोजयति। नमः कृष्णाय॥ नमः सरस्वत्यै॥ अथकथोद्घातः- बृहत्कथासें एककथानक लिखाजाताहै बालकोंके अवर होशयार लोकोंके सुननेवास्ते कथाके सुननेसें ईश्वरकी मायाका विस्तार मालूम पड़ताहै इसपृथ्वीमें क्याक्या हूवा क्याक्यानहोवेगा आगेहोशयार लोक इस कथासें इसबातकों जानेंगे ईश्वरकी माया बडीदुस्तरहै अवरबालकभी सुननेसें होशयारहोंगे ईश्वरकी महिमाकों जानेंगे अवर भजनमें लगेंगे इसीवास्ते श्रीपंडितरघुनाथजीने कहा भाषाकर इसकथाकोंबनावो सभीलोक पढें अब सोकथा लिखीजातीहै॥ अर्जुनदेवजो पांडवहूवा उसकापुत्र अभिमन्यूहूवा उसकापुत्रपरीक्षित महाराजा चक्रवर्त्तिहूवा उसकापुत्र जन्मेजय महाराजा चक्रवर्त्तिहूवा उसकापुत्र शतानीक हूवा चक्रवर्त्ति उसकासहस्रानीक पुत्रहूवा वहू चक्रवर्त्तिनहूवा किंतु सहस्रानीक बहुत ...रहताथा इसवातसें चक्रवर्त्ती गई भाई

उ. क. १

औरउसी सहस्त्रानीकने हस्तिनापुर जो आप
नीराजधानीथी औरदिल्लीभीछोडदीई कौ^
शांबीनगरी बसाई उहदेश उसकोंपसंदआ
या उसीदेशकों वत्सदेशभी कहतेहैं उसीस
हस्त्रानीककापुत्र उदयनहूवा उसीकोंवत्सरा
जभी कहतेथे उहचक्रवर्त्तिहूवा किसनरां
उसकाबजीर बडाहोसपारथा उसनेगईहूई
चक्रवर्त्ती फेरसिद्धकीई इसीसें वत्सराज चक्र
वर्त्तिहूवा बजीरकेजोरसें उसकिदों राणीयां
दो होईयां एकवासवदत्तानाम चंडमहासेन
उजयनकाराजा उसकीपुत्री, दूसरी पद्मा
वतीथी प्रद्योतराजा मगदेशका उसकीक
न्याथी, इनदोराणीमें वासवदत्ताके पेटसें पु
त्रहूवा उसकानाम नरवाहनदत्त हूवा जि
ससमें जन्मा उसीसमें आकाशवानीभई का
हेवत्सराजा यहविद्याधरोंका चक्रवर्त्ति पेदाहू
वा शिवजीकी दयासें इसकाकारण इहथा न
दशिवजीने कामकोभस्मकिया नदही रतीजो
कामकीस्त्रीहै उसनेबडातपकिया शिवजीं^
प्रसन्नतावास्ते फेरशिवजीप्रसन्नभये कहा

रमांगरनीनेकहा महाराज मेराभर्ता अंगसहि
नहोवे फेर शिवजीनेकहा अच्छा दोजन्म अं
गसमेत होवेगा एकजन्म रुक्मनीमहाराज
सेंहूवा प्रद्युमननामभया दूसराजन्म वत्स
राजसेंहूवा नरवाहनदत्त नामभया अबनर
वाहन दत्तके आगेकीकथा लिखीजानीहै।
॥८॥
वत्सराजजो राजाहै सोदोईस्त्रीसंयुक्त एकपुत्र
जोनरवाहनदत्तहै उसकीचिंतामो बडागिरि
फ्तारभयाहोयाथा कि यहमेराबालककैसेप्र
सन्नरहे इसकों कोई विद्याधरमारेनहीं कि
व विद्याधर मनुष्यकों अपनाचक्रवर्तबणना
बहुत बुरा समझतेहैं इसीवास्ते राजेकों अप
नेपुत्रकी बडी चिंता लगीहूईथी यहबातस
मझकर राजेकाजोबडा वजीर नामऊसका यौ
गंधरायणथा सोवजीर राजेकों कहनेलगा
हेराजा पुत्रकी चिंता मतकर राजाश्रद्धताहै
चिंतामेरी कैसेजाए वजीरकहताहै हेराजाप
हूजोनेरा पुत्रहे यहशिवजीने विद्याधरोंका
चक्रवर्तबनायाहोयाहै इसबातकोसमझकर वि

लि० कौ० ३

याथर मारणके उद्यममें लगेथे यह बातशि
वजी महाराज चीननेभये फेरउनाने अपना
एकगण अहश्य नेरेपुत्रकी रज्ञावास्ते साथ
लगायाहै उस्कानाम स्तंभकगणहै और रज्ञा
कर्त्ताहै नेरेपुत्रकी नेरेकोंक्याचिंताहै राजाह
के नककों कैसेरखवाहै इसबातकी वजीर
कहताहै हेराजा यहबातहमसे नारदजी कह
गयेहैन इसीसेहमके खबरहै ऐसे राजा अवर
वजीर बातांकरतेईथे तोमयंत आकाशसें ए
कदिव्यपुरुष इससभामो मुकट अवर कुंडल
अवर खड्गधारणकरहुवा बडासुंदर आयकर रा
जेवत्सकों अवर नरबाहन दत्तकों प्रणामक
र्त्ताभया राजेनेभी यथायोग्य उसकों आदर
वहुतसाकीया फेर पाछेसें वत्सराज उस
पुरुषकों पूछताभया हेदिव्यपुरुष तूंकौ
णहै तेरामेरेपासआवणेका क्याप्रयोजन म
नवञ्छेहै वडेकौनकनाल पूछताभया सो
दिव्यपुरुष वत्सराजकों कहताभया हेराजा
मेंमनुष्यथा मेरानाम शक्तिदेवथा अबमेरा
नाम शक्तिवेगहै मेरेकों अपना जोस्वरूपहै

गौरिमुंडनाम विद्याधरोंका राजा उसने मुझे
वरदीया हुवाहै तेरेकों कोईशत्रू नहीजीतेगा
विद्याधरोंका चक्रवर्त्ती नरवाहनदत्त वत्सरा
जका पुत्र होवेगा उसकी आज्ञा तैने माननी
सोमें विद्याके प्रभावसेंहोगयाजो साउावक्रव
र्तैहै उसकोंमे जाणताभया सोतेरापुत्र नरवा
हनदत्तहै इस्के मिलनेवास्ते मेंइहांआयाहों
एहबात राजावत्स सुनकर बडेआश्चर्यवाला
हुवाहुवा पूछताभया हेपुरुष विद्याधर कि
सतरांहोतेहै और विद्याधर कैसेहोतेहैं अवर
हजोमनुष्यथा तेरेकों विद्याधरता कैसेप्रा
प्तभई अवर किनोसाधनोंसें विद्याधरता प्रा
प्त होतीहै हेमित्र जोमैने पूछा सोसंपूर्ण
मेरेतांईकहो एहवचन राजेका सुनकर सो
जो शक्तिवेग विद्याधरथा सोबडे विनयपूर्व
क कहताभया हेराजन् इसजन्मविखे अ
थवा पूर्वजन्मविषे शिवजीकी आराधनजि
नोनेकिईहै सो विद्याधर होतेहैं इसीकेका
पासे सोविद्याधरता अनेकप्रकारसें होतीहै
कोईखड्गसिद्ध करतेहैं कोईमालासिद्ध करतेहैं

कोईकपडासिइकरनेहै कोईवेमालसिद्धक
रनेहैं इनोंकामोंसे विद्याधरता प्राप्तहोतीहै
अवर जैसेमेरेकों प्राप्त होईहै सोनम्र हनो
सोशक्तिवेग विद्याधर वासवदत्ताके सन्मुख
अवर पद्मावतीके सन्मुख अोर सोगंधनराय
ण मोवनीरहै उस्के सन्मुख अवर नरवाहन
दत्त राजपुत्रके रोबरो कथाअपनी कहता भ
या हेराजा आदिसमयमें रह्नो कांईमान न
गरहै कैसाहै इष्टीका भुवनहै उसविषे
एक परोपकारी नाम राजाभया कैसा राजा
था शत्रूको नपानेवाला बडा राजाथा उस।
कीराणीकानाम कनकप्रभाथा कैसीथी जै
से मेघकेसाथ बिजली होतीहै परंतु बिजली
चंचलहोतीहै सोराणी पतिव्रताथी समयपि।
वे उसराणीयासों राजाकी कन्या उत्पन्न हो।
तीभई राजा परोपकारीने उस्की माताके ना
मपर नाम कनकरेखा धरा मानों विधाता
ने लक्ष्मीजीको जोअहंकार रूपकाहै उसके
दूर करनेके निमित्त बनाईहै सोराजा कन्या
शनेःशनै बधतीभई लोकोंके नेत्रोंकी मानो
चांदनीहै सो एक समय नद मवान लगी।

होने जवावस्थाभरनेलगी तब राजा परोप
कारी अपनी राणीको कहनेलगा एकांत बैं
ठके क्या लगाकहने हेराणी कनकप्रभा
जिसदिनसे यहपुत्री बधतीजातीहै उसीदि
नसे मेरेकों चिंता वधतीजातीहै किवू इस
के सदृश वरकेवास्ते मेरे हृदयकों चिंता
बडा दुःखदेतीहै किवू स्थान भ्रष्टहीनजो
कुलकी कन्याहोवे सो भयकों देनेवाली
होतीहै जैसे स्वाधिस्वैभी होवेसर्पणी सो
सुनतेही भयकों देतीहै जैसे विद्या जोहै
सोभ्रम करके अपात्रविषे देईजावे सोविद्या
नाधर्मनिमित्तहोती नायशहोताहै केवल
मनकोंही दुःखदायक होतीहै इसी प्रकार
कन्याभी अलपात्रकों दीईहुई नायश ना
धर्महोताहै केवल भयही रहताहै दोई कु
लका नाश करनेवाली होतीहै सोनृप मुझ
कोंकहदे किस राजेको मेने कन्या देने
योग्यहै इस मेरी कन्याके सदृश कौनरा
जाहै यह चिंता मुझकों बडीहै एहबात
जबराजेकी रानी जबराणी कनकप्रभा इस

कारके सखेकों कहतीभई हेराजा तूंकरता
है मुझे बडीचिंताहै कन्याकेविवाहकी तेरी
कन्यातो विवाहही नहीमानती किसतरह
तेनेजाना यहरामाकहेतो रानी आपहीकह
तीहै हेनाथजीमेरे आज मेरीकन्या गुडियों
कावस्त्र गुडियोंका ब्याह करावतीथी मेनेइ
सप्रकार कनकरेखाकों कहा हेपुत्रि इसीप्रका
मैकव र मेराविवाहदेखोंगी यह बातोंथी अबी उसी
वक्त कनकरेखा लगीकहने हेमाता फेर वे
सीबात मुझे कहीनकहनी तुमजाणो व
डेक्रोधकरके कहतीभई फेर लगीकहने
में किसीकोंनही तुमनेदेनी मेरा वियोग।
होजायगा मैं तुमारेघर कन्याही बनीहों
अन्यथा तुम मुझे औरसें विवाहकरावोगे
तद मेरेकों मरीहुई समझलेना इसमें अछ
कारणहै ऐसे मेरेकों पुत्रीनेकहा इहीया।
नसनानेकों मैं आपकेपास आईहों ओह
मानतीनही विवाहकी तुमको चिंताक्याहै
बारके विचारका क्या प्रयोजनहै इसप्रकार
रानीकावचन सुनकर राजवज्राभ्रम कर्णोभ

पा ऽरताभया उसीसमे कंन्याके अंतःपुर
कों राजा जाताभया अवर कंन्याकों कह
ताभया हेराजपुत्रि देवकन्या असुरकन्या
ऋषिकन्या बगातएकर भर्त्ताको चाहतीहै
हमको श्रेष्ठवर प्राप्तहोवे सोतूं मनुष्यक
न्या होकर भर्त्ताका निषेध कियू करा राज
कन्या इहपिताकावचन सुनकर नीचेनेत्र
करकर पिताकों कहतीभई हेपिताजी अबी
मेरेकों विवाहकी इछानहीहै इसबातमे
आपकोंक्याहठहै जद कनकरेखाने इहबा
तकही तबराजा बडाबुद्धिमानहै उसपुत्री
कों कहताभया हेपुत्रि कन्यादानथेंपरे श्रे
ष्ठाकोंनदानहै यहस्त्रीकों पापहूरकरणेवा।
ला सभीदान उसीकीदानथों नीचेहैं एकेतो
दानकापुण्य प्राप्तहोवे अवरभी शास्त्रोने लि
खोहै कन्यावंधुके अधीनहोतीहै स्वतंत्रक
न्या कबीनहीहोती कन्यामे पालीतीहै सो
केवल दूसरेहीकीहोतीहै दूसरेके निमित्तपा
लीतीहै बाल्यावस्थाके बिना कन्याकों पि
ताकाघरकैसाहै भर्त्ताकेघर रहणा कन्याका।

कं॰ ५

लिखाहै और पिताकेघर कन्या ऋतुमतीहोवे
तौबांधव अधोगतीकों प्राप्तहोतेहैं वृषली क
न्याकानाम लिखाहै उस्के भर्त्ताकों वृषलीपति
कहतेहैं तब पिताने ऐसाकहा तबराजपुत्री
कनकरेखा अपनीमनोरथवाली बातीकह
तीभई हेपिताजी आपने मेरेकोंदेनाहै तोएह
बातसुनो कनकपुरीनगरी जिस देखीहोवे ब्रा
ह्मणने अथवा क्षत्रयने तिसकेविवाहदेवो
अन्यथा मुझे स्वराबनकरणा ऐसे राजपु
त्रीनेकहा तोराजा मनमें चिंतनलगाकरने।
क्या जोइसकन्याने विवाहतो मानलीयाहै।
अच्छीबात भई अवश्य किसेकारणसे मेरेघरको
ई देवीजन्मीहुईहै जोएहबात नहोवेतो एह
क्या जानतीहै कनकपुरी एहचिंतनकरके कन्या
कौंछडकर राजा जाताभया अपना राजकृत्य
करताभया दूसरेदिन राजा सभामोबैठताभया
सभी लोकोंसे सभापूर्णहोतीभई तबराजा लो
कोंको पूछताभया तिसांकेमध्यविषे किसीने
कनकपुरी देखीहोवे सोकहदेवे ब्राह्मणहोवे
अथावा क्षत्रियहोवे मेंउस्कों कन्या अवश्यदेव

राजपद देवेंगा इहराजेकावचन सुनकर सभी
लोकबोले हमनेतो कनकपुरी कानोंसेभीनहीं
सुनी देखनेकीबात दूरहै यहबातकहकर आप
समें मुखलगे देखने इसके उपरांत राजेने डेव
डीवाला बुलाया हैप्रतीहार ढूंढंढोरा सारेशह
रमेंफिरा जमक किसीने शहरविखे सुनीहोवे
अथवा किसीने देखीहोवे इहराजाका वचनसु
नकर बाहर आयके राजपुरुषोंको सुनावता
भया फेरनगारालेकर ढंढोरा आश्चर्यरूपी सु
नावताभया ॥ श्लोककर्के ॥ विप्रःक्षत्रियवसु
वावाकनकपुरीयोत्रदृष्टवान्नगरीम् वदनसुत
सैराजादृदातितनयांचयौवराज्यंच ॥ इसकाअ
र्थ ब्रह्मणहो अथवा क्षत्रियहो युवाहोवे अव
र कनकपुरीकों देखाहोवे सोकहदेवे उसकोरा
जा कन्याकों और युवराज्यपदकों देवेगा यह
आदविखे नगारावजताहै पाछेसे यहबातहै
आश्चर्यरूपीवचन सुणायाजाताहै सबलोक इ
हवार्ता सुनकर लगेकहणे आजका कनकपु
री सुनायाजातीहै जोअसी हुईभीभये अजनकर
असा कदीभी नादेखी नासुनीहै यहका आश्चर्यहै

पं० कं० ६

शहरमें बडेबडे हडपुरुष लगेकहने नगरासनक
र एकभीकोई सेलानही जोकहे मैंने देखीहे अ
थवाकहे जोमैंनेसुनीहे इनमेंसे उसीकइमान
पुरीका रहनेवाला शक्तिदेवनामवाला बेलदेव
ब्राह्मणकापुत्र उसढंढोरेकों सुनकर लगाकह
ने मैंनेदेखीहे असत्य कहताभया किसनिमि
त असत्यकहताभया जोव्यसनीथा जुवाथा जू
वेकरके निर्धनहोयाहोयाथा यहमनमें विचारता
भया जूवेकरके मेराधन संपूर्ण नष्टहोगयाहे
अब मेरेकों पिताकेपास जाना नहीबनता अ
वर वेश्याकेघरभी मेरेकोंजगानही तिसथे मे
रीगती झूठविनानहीहैयहबात मनमें करता
भया परहशब्द सुनके औरबी विचारताभया
मेंझूठकहोंगा मेराझूठ कौनसमझेगा इसने।
देखीहे अथवा नदेखीहे जोईश्वर अनुकूल।
होवे तो राजपुत्रीमुझे प्राप्त होयजायगी नही
तो झूठतोहैहीं यहविचारकर उनकों कहता।
भया जावो राजेकोकहो मैंने कनकपुरीदे।
खीहे यहबातजब राज मनुष्योंनेसुणा औं
पुरुषोंनेकहा चलप्रतीहारपास प्रतीहारेने

कीवालेकों कहतेहें मधमें नर्मदा भनाघरघोंके
सहित अमीहारकेपास आताभया उसें या
गेधी इसीप्रकार करिताभया मेंनेकनकपु
री देखीहे उसें श्रीग्रह स्वर्गजिनेमानस
तायाथा राजानेभी इसीप्रकारकोप्रश्नभी अभी
प्रकार करताभया तिसेंकोकर श्रीमानिकेनि
धनत्यकेसे कहताभया उसीकाफी मेनहें
न देके देखनहारे जोहें उनकेआगेकहा वाय
र्यहे राजाकेआगे अवसनकयाकही तातवहक
ग उसब्रह्मणकों कनकरेखाकेपास सेजता
भया तिसुधिजानेसपासे शिमिंपेंअपरंत क
नकरेखा अमीहारकेद्वारा उसकों राजामीभई
हेब्रह्मण मेनेकनकपुरी देखीहे सोयातिदे
व ब्रह्मण कहताभया मेनेकनकपुरी देखीहे
मेंविद्यापडनेनिमित्त प्रथिवीकों भ्रमताभया
भ्रमते भ्रमते कनकपुरी मेनेदेखीहे नरदश
तिदेवने यहबातकही नवकनकरेखा उसकों
सबमीभई किसरलेने कनकपुरीगया भव
कनकपुरीनगरी केसीहे यहतेकहरे ऐसे
नवरानपुत्रीमेसुनकर नवओह ब्रह्मण शक्तिदे

२१

व लगाकरब्राह्मणपीठ होकर हे राजपुत्रि इसन
गरसें मेंवर्धमाननगरकों जाताभया इहांसे
काशीकों जाताभया फेरकाशीसे बहुतदि
नपाछे पौंड्रवर्धननगरकों प्राप्तभया पौंड्रव
र्धननगरसे कनकपुरीकोंगया सोभूमि मेंने
देखी कैसीहै पुण्यवालेजीवोंकी भोगभूमि
है पलकांबिना नेत्रोंकरके देखनेलायकहै
जैसेइंद्रपुरीहै तैसेहीकनकपुरी देखीहै हे रा
जपुत्रि मेंने दिया कनक पुरीमें पूर्वी चलक
रके फेर मेंअपने शहरकों आयाहूं जिसरस्ते
मेंकनकपुरीकोंगया सोमेंनेरेतांई कहदिया
है इसप्रकार झूठावचन बनाकरके शक्तिदेव
कहताथा तावत् राजकन्या हसकर वचन श
क्तिदेवकों कहतीभई हेब्राह्मण तूंसत्यकहता
है तेनेकनकपुरी सत्यकरदेखीहै परंतु फेरक
हदे किसरस्तेतूं कनकपुरीकों गयाहै यहवा
तसुनकरभी शक्तिदेवनाम ब्राह्मण पीठहोक
र इसीप्रकार कहताभया तब राजपुत्रीनेस
ना दासीयोंके हाथसे इसब्राह्मणकों निका
सदिया फेर राजपुत्री पिताकेपास जातीभई

पिता उसराम भुविकों एकठगनामभया हेकनकरे
हे ब्राह्मणने कनकपुरी देखीहै केनही जब
ऐसे वचनकी वसुमताको कहतीभई हेपिताजी
तुमराजेहोकर अविचारलोकर वर्तदेहो तुम
क्या नहीजानते धूर्तलोक सीधेपुरुषोंको
ठगलेतेहैं हेपिताजी ओऊ ब्राह्मण झूठहीका
हताहै मेरेको धनारले चाहताथा उसनें क
नकपुरी नहीदेखीहै असत्यकहताहै हेपि
ताजी तुमनहीजानते धूर्तलोकोंने अनेकवंच
नाकरीनीहै आपने शिवमाधवकी कथा न
हीसुनीहै सोकथा मैंतुमको सुनावतीहों य
हबातकेहकर कथासुनावतीभई ॥ प्रथमक
थाप्रारंभः ॥ हेपिताजी एक रत्नपुरनामान
गर होताभया जैसानामथा तैसाही उत्तम न
गर धनवालाथा बडेबडे धनवाले उहांरहतेभ
ये उसनगरमें शिवमाधव दोठग होतेभये
अनेकठग उनके नोकरहोतेभये अनेक छल
छिद्र जानतेथे अनेक माया इंद्रजाल तादृसि
द्धिजानतेथे नगरके धनवाले सभीलोक छलो
करके इंद्रजालोंकरके ठगलिये फेर उसविषे ध

नमहीरहा एकदिन आपसे सलाह करतेभये
कि हमने यहनगरतो ठगकर लूटलईहै अब
रहा धननहीरहा हमारा विश्वासभी यहलोक
नहीकरते अरहांसे उज्जयनी नगरीको रहने
वास्तेचलो उस उज्जनी नगरीमों सुनाहै रा
जेका पुरोहित शंकरस्वामी उसका नामहै बडे
धनवालाहै अवरबडा कृपणहै अवरराजाति
सको दानदेताहै उससे आधीदक्षिणा लेता
है अवरसदाही भुवाचढीरहतीहै सातदेगां
रवजानेकीभरीहै अर्थ सातक्रोड धनका मा
लकहै उससे पुनीकरके धनको हरांगे फे
र मालवदेशाके जोजो स्त्रिजातहै उनकारखले
वांगे अवर सुणाहै उसपुरोहितके एककन्या
रत्नभीहै उसकोंभी उससेलेवांगे अवश्य हमा
राकार्य उसपोहितसें होवेगा हेपिताजी जेह
दोनुठग इसप्रकार निश्चयकरके जेह जोशिव
अवर माधव जो महाधूर्तहैं सो उज्जयनीमें जा
तेभये शनैः शनैः उजयनकेपास जबपहुंच
नलगे तब माधवजोथा उसने राजपुत्रका
वेसकिया अवर दोतिनसब ठग अपनेनोकर

कारके अपनेयासरखके किसीग्रामविखे र
हताभया शिवजोहै सोउजैनमें प्रवेशकरता
भया कैसाहै बडीमायाको माननेवाला ब्रह्म
चारी बणकर सिप्रानामजोनदीहै उसके कना
रेपर मढिया बनायरताभया अबउसके दिनका
काम कवी करताहै प्रातःकाल उठकर म(
ढियामें खूब मिट्टी अवर गोबर मिलाकर
लेपन करताहै अवर मृतिकाके भांडे बाह
र लोकोंके दिखानेके लिये रखे होयेहैंतू ले
पनजोकरताहै सोमानो अवीचिनामकोनर
ताहै उसकामानो सूत्रपात करताहै फेर तिसका
लपर्यंत जलविखें अधोमुखहोकररहताहै
मानो आगेजोहोणीहै अधोगती अकर्म कर
लिये उसकीआगेही अभ्यासकरताहै उहांसेबा
हरनिकलकर सूर्यकेसन्मुख खडारहताहै हा
थऊंचेकर मानोबतावताहै इसीप्रकार स्थली
में देणेलाइकहों फेरदेवताके आगे गायक
र जप अवर पूजा करताहै पद्मासनबांधक
रबैठताहै मानो दंबका ब्रह्माहै जैसेविधा
तासे सृष्टिउत्पन्नहोतीहै तैसेही दंभइसीसे

उत्पन्नहुवा है शिवोकी एकाग्रता मानो श्रेष्ठ पुरुषोंके जो हृदय रूपी पुष्प हैं उनोंको कष्ट टकर त्यागकर पुष्पचढावता है फेर एकाग्र के उपरंत मिथ्याही जपलगता है कारन सो। क्याकरता है ठगीके निमित्त ध्यानकर विचार ताराहता है फेर तीसरे पहर कालामृगचर्म उपरलेकर भिक्षाके निमित्त शहरमो आवता है मानो उसनगर विषें मायाकर ठगनेवाले उसठगीकाकटाक्ष होताभयो फेर जितने घरोंसे भिक्षालेणी उतनें से लेता है क्या थे भिक्षा तीनो गृहोंसे लेताथा दंड मृगचर्म कमंडलू धारया हूवा है फेर डेरे आयकर भिक्षाके तीनभागकरताथा मोनीहोकर भिक्षाकरताथा तीनभागों में एकभाग काक उन्नेकों एकभाग अभ्यागतकोंदेवे एकभाग अपणीउदरभरत्राकों एरा ताभया जेहीदंभकाबीजहैभाग फेरबैठकर रुद्राक्ष मालाकों फेरताथा मानो अपनेजो पापहैन उनकोंगिनतामाला है रात्रिसमयविषे अपनीकुटियामो एकलाहीरहता है दूसरेकों रात्रिविषे अपनेपास नहीरहणेदेताथा रात्रिमें

बैठकर लोकोंकेसूक्ष्मस्थानोंको चिंतन करतीहै
कैसेइनोकोंवश्य करोंमें इसीप्रकार दिनदिनप्र
ति बडेकष्टकारके दंभकेवास्ते भारीतप करता
था उसतप करके नगरीके लोकोंका मनवश्य
करताभया सारेनगरमें लोककहने लगे अहो य
ह तपस्वीहै अवरध्यानभीबडाहै प्रसिद्ध सा
रे होतीभई सगले लोक भक्तिकर नम्रहोतेभये
बडीटहल करतेभये इतनेमें दूसराजोहै माधव
राजपुत्रबनाहूवा हूतकेहाराप्रसन्नताभया सभलो
क शिवके अधीन होगयेहैंतब सोभी नगरकों
आवताभया नगरमें डेरा करताभया दूसरेदिन
स्नानकरणेकेनिमित्त सिप्रानदीकेकिनारे जिसज
गा शिवथा उसीजगामें राजपुत्रवेश धाराहूवा
नदीमें नोकरो सहित स्नानकर शिवकेपास आ
वताभया कैसाहै शिव देवताकेआगे जपकरता
था उसशिवकों देखकर अतिनम्र होकर चरणों
में पडताभया उपरांत लोकोंकोदेखने कहणेल
गा एसातपस्वी जगतमें कोईनहीहै मैंनेती
र्थोमें भ्रमताहूवा बहुतवेरीदेखाहै शिवने आप
णीस्तुतीसुनकर भी दंभकर लज्जितनाईमकर बे

हरहा मानो उसकोजानतानहीं माधवराजपुत्र।
भीस्नानकरके डेरेकों जाताभया फेर रात्रवि
खें मिलकर खावपीयकरके आपस्से सला
हकरतेभये जोजो आगे करनाहै फेरपिछले
रात्रिपहरमें शिवजोहै सोअपनी जटियामें च
लेआया रात्रिवि खे दोऊ इकठेरहतेभये उपरंत
प्रभातसमें माधवने एकधूर्तकोकहा पोतीजो
ड़ाबड़ेमूलका लेकर परोहितकेपास जाभेटा
लेकर पहुरोहतकों जायकेकहहै क्या माध
वराजपुत्र दक्षणसेआयाहै और सगोंत्रियोंने
निकालदियाहै अपनेपिताका बहुतधनलेक
रआयाहै हमनेसरीखें राजपुत्रसाथ बहुत
हैतू उनकोंलेकर तुमारेराजेकी सेवा करा।
चाहताहै यहबार्त्ता तूंशंकरस्वामीकोंजायक
रकैहदे यहबार्तासुनकर उनजोधूर्तहै सो
पोतीयोंकाजोड़ालेकर शंकरस्वामीकेपास।
जाताभया एकांतविखेभेटादेताभया अव
रमाधवकासंदेस देताभया सोजो प्रोरुतहै भे
टाकेलोभसे मानताभया मनमें ओर लोभ।
कीआशाकरताभया अबि कथिकरताहै सो।

भी जो पुरुषहै उनकोभी जो पदारथ देणा है सो
ही एक मुख्य आकर्षण मंत्र है उसको अरु रंत
पूर्णजोहैं सो धोमियोंका जोड़ाहै कर अब
माधवकी वार्ता सुनाकर उसे कोंचलेआवना
भया दूसरेदिन उहजोमाधव राजपुत्र है सो
आपही मिलनेवास्ते आवनाभया उसको पु
रोहित बहुआदर करनाभया उहां बैठकर
यथीरोचकी वार्ताकर माधव डेरेअपनेको
आवनाभया फेर दूसरेदिन भेटालेकर प
क मनुष्यभेजा फेर उसमनुष्य प्रोहतको
कहनाभया परिवारके बहुतहोणेसे अमी
सेवाचाहनेहां इसीवास्ते आपकाशरण मैं
नेलीयाहै यहबातसुनकर पुरोहित मान
नाभया मैंतुमाराकाम करदेवोंगा धनकेलो
भसे काउनकाकामबणेगा जोमुजेधन ब
हुतदेवनगे उपरंत उसीसमे प्रोहत राजापा
सजाना कहनाभया हेराजन् एकराजेपुत्र
माधवनाम दक्षिणदेशसें तुमारीसेवाकर
णेकों आयाहूवाहै दोतीनसोराजपुत्र सा
थरहेन् राजा पुरोहितकीबातसुनकर अब

ओहनके मुलाहजेसे मानलेताभया हूसरे
दिन ओहनमाधवकों भीकोंसहित राजापास
लेजाताभया राजाभी माधवकोंदेखताभया
कैसेहैमाधव रामचंद्रसहृश्यहै आकारजिसका
ऐसेमाधवकोंदेखकर राजा आदरकर ग्रहण
करताभया उसकीहूभी रामचंद्रसहृश्य लगाहे
ताभया माधवबी राजेकीसेवा करताभया रात्रीवि
खे शिवकेसाथ निमसलाह करतारहे कोई ।
थोडाही समय नगरविखें अकरताभया एक
दिओहिन लोभकामाराहुवा माधवकोंकहताभ
या तूडेरामेरेहीपासकर मैंतकेहवेली खोलीक
रदेताहों यहबात सुनकर माधव नोकरोंसहि
त उसकेपासरहतारहा कैसे जैसेमकुणमा एक
जीवहै सोजैसे वृक्षके आश्रय रहकर उसीवृक्ष
का नाशकरताहै तैसेही माधवकारहणा ओहन
कोंहोवेगा एकदिन ओहनकों माधवकहताभ
या मेरेपासधनहै बडारत्नमयी सो अपनेरखणा
नेमोथदो मेरेकोंभयरहताहै यहवात्ताकहिकर
उसकोबतावताभया जोडेरत्नबनायेहोये उत्तम
रत्नोसेभी उत्तम भासतेहैं बणाकरताभया आथा

छकाए उवैका खोलका उन्कास्वरूप बनावता
भया जैसे नर्मनर्म कामकर पशूकों अपणेव
शकर्महे तैसेही उसकेमनकों लुभावताभया जै
से उसकोप्रतीतभई मेरासंपूर्णखजाना एकरत्नका
भी मूलनहीहै जोहरत्नोकीपिटारी मोहनकों रा
खनेवालेदिई मोहन अपने तोशेखानेमो रखता
भया जावताभया माधवअसंख्य धनवालाहै
अब वहबात माधवनेभीजानी मोहनकों निश्चय
हूवा इसधनका फेरवा करताभया अपना अ
न्नखाना घटावताभया लगाकहणे मेरेकों कु
छ रोग हूवा यहबातप्रसिद्धकरी दिनदिनअन्न
कोंघटावताभया रोगीआपकों कहताभया अ
साध्यरोग उसके लगाहै बडाकृशहोताचला एक
दिनमोहन खबरलेनेवास्ते माधवकेपास जाता
भया माधव शय्याविषे लम्बापडाहूवा तबमो
हनकोंलगाकहने शनैःशनैः हेमोहनजी मेरे
शरीरविषे बडीमाडीदशाहै जीवणेकीउमेद आ
शानहीहै मैनेइहधन क्याकरणाहै जिसथेंकि
सी सत्पात्रब्राह्मणकोंल्यावो मैंअपने हाथसे सर्व
खदानकरोंगा जिसथे इसलोकविषे अवर पर

पं॰कं॰ १२

लोकविषे कल्याणवास्ते दानदेतानाहै यहजीवना
जो अनित्यहै मनस्वी जीवको इसजीवलोकमें कौन
आशाहै मैंसर्वस्व दानकरताहूं इहबातसुनके ।
मोहनने कहा अबमैं ल्यावताहूं यहबातसुनक
र माधवओझा सोमोहनके चरणोंके ऊपर सिर
धरताभया उपरांत मोहन जिसजिस ब्राह्मणको
ल्यावताहै उसीउसीको माधवनहीमानता कहता
थाइससेभी श्रेष्ठहोवे इतनेधनलेनेका पात्र व
डाहीश्रेष्ठहोवे इसवास्ते उनको नहीमानता
इतनेमेंसे एकमूर्खबोला मोहनजी इसराजपुत्र
को सामान्यब्राह्मण पात्रनहीभासताहै तिसथें
सिप्रानदीके तीरपरजो तपस्वीहै सोइसधनके ।
लेनेकापात्रहै माधवराजपुत्र आपको कहन
हीसक्ता सोउसकोदेखो उहांहीहै कि चलेगयाय
हबात जबमाधवनेसुनी तबबडे दुःखसें कहता
भया हेमोहनजी उसीकोल्यावो जिसप्रकारआ
वे तिसप्रकारल्यावो मेरेऊपर दयाकरो उसजैसा
पात्र ब्राह्मण कोईनहीहै जबपरोहितनेसुना त
ब सिप्रानदीके कनारे शिवकेपास जाताभया
वहां ध्यानविषे बैठाहुवाहै मोहन उसको प्रदक्षि

णकर उसकेआगे बैठारहा उपरन्त सर्पगो
है शिव सो शनैः शनैः नेत्रोको खोलताभया
औरओहत नमस्कार करताभया बडानम्रहो
कर कहताभया क्या हेमभो मैजके आपको
कसा चाहताहो आपक्रोध नाकरो तोकहो
एकसमय दक्षिणदिशा थें राजपुत्र माधवनाम
बडेधनवाला आयाहुवाहे सो सहोडः खोहो
या सो सर्वस्वदेणेको नयारहुवा जोआपग्र
हणकरो सो सर्वस्व देदेवेगा नानारत्न बडेव
डे मोलकेहैन उनोंकके विदारीभरीहुईहै
यह वाणी सुनकर मोन त्यागकर शनैःश
नैः लगाकहणे शिवमरा धर्म हेसोहुनलो।
मैं ब्रह्मचारीहों मैभिक्षामात्र ग्रहणकरणेवा
लाहों मेरेकोधनकेसाथ क्याप्रयोजनहै उप
रंत ओहमलगाकहने हेब्राह्मन आपआश्रमो
का क्रमनहीजानते ग्रहस्थीहोकर विवाहकर
के घरविषे देवता पितर अतिथीको पूजन
करे धनोंकके त्रिवर्गकीप्राप्त होतीहै धर्म
अर्थ काम इसकानामत्रिवर्गहै सो गृहस्थीको
धनोंकके प्राप्तीहोतीहै गृहस्थीसभनो आश्रम।

मोतेस्रेष्टहै यहबात सुनकर शिवजोहै सो
फेरकहताहै हेपुरोहितजी मेरेकों स्त्रीकी।
आमीकहांसेहोवे किव मैं माडेजलकाचि।
वाहनहींकरणा अहजलवालेने मुझेदेणीन
ही माडेकीमेनेनहीकरणी यहवार्तासुनकर
ओहयन सखकर भोगलेलायक मानकर म
हालोभीजोआहनहै वक्तसमझकर कहणेल
गा हेशिव मेरीकन्या अत्यंतरूपवतीहै विनय
स्वामीउस्कानामहै उसकोमैं तुझे देवोंगा और
जोधनहूं प्रतिग्रहका लेवेगा सोभीजेगमैं हू
रवोगा तूग्रहस्थआश्रमकोंधार यहबात सुनके
अपनामनोरथ सिद्धहूवा समझकर महाधू
र्तजोशिवहै सो फेरकहताभया हेमोहनजी।
जबआपकों इसबातका आग्रहहै तब अच्छा
मेंकरोंगा तुमारी इच्छाकर्के एकबातहै सोना
चांदीरत्न इनकोंमैनाहीजानता इसबातमोमै।
जोमूर्खहों मैंतो आपकीजिह्वाकेऊपर वर्तों।
गा आपजैसाजानो तैसाकरो यहबातशिवकी
सुनकर बडाप्रसन्नहोताभया उपरंतमूर्खजो
मोहनहै उसशिवकों अपनेघर ल्यावताभया।

नामउस्कानोहैशिव औरहैमोगेह अशिव ओ।
हनकेनाश करणहारा उपरंत गेहजो ओहनहै
सोमाधवकों अपनेघरल्यावनाभया कहमाभ
या हेमाधव तेरेवास्ते मेने ओहनपस्वी ल्यायाहै
तेरेवास्तेमेंनेकन्यादिईहै उस्कोतदल्यायाहैं मा
धवने ओहितकीवडी अस्तुतिकरी उसशिवनेम्रा
गेनकरार करलियाथा आदमें विवाहकरोंगा
पाछे प्रतिग्रहलेवोंगा इसवास्ते ओहित उसमा।
ई कन्याविवाह देनाभया षडेलेपिकर पाली
हूईथी मानोकन्या नहींदीई सारीसंपदा देगली
अपनी मूर्खताकर हारीहूई उपरंत विवाहउह
तीसरेदिन माधवकेपास प्रतिग्रहकेवास्ते लेना
नाभया माधव उसशिवकोदेखकर कहताहै
अनर्थनपवालेजोतमहो तमारेताईनमस्कारक
रताहूं यहवार्ता वारंवार कहकर चरणोंकेउ
पर अपनासिर रखनाभया फिरमोहनके भंडा
रसें वस्तुजोथी सोल्यायकर विधिपूर्वक शिव।
के हाथकेऊपर संकल्प उसीमोहनसे पद्मापक
र देनाभया बऊनसारेरत्न जूठेबनायेहोये पि
टारीभरीहोई शिवभी प्रतिग्रह लेकरमोहनके

शि०कां० १४

हाथमेदेनाभया कहनेलगामेंजोकछन
हीजानता आपीजानतेहो तुमहीतरको
अपनेपास शोहनकहनाभया मैनेजोयाद
सीतुमारेसाथ अंगीकारकियाहुवाहै तु
मकोंइसधनकी क्याचिंताहै यहवातकह
कर शिवकेहाथसे शोहनलेतेनाभया आ
शीर्वाद माधवकोंदेयकर शिवजोहै सो
अपनीस्त्रीके मंदिरचलेजावतनाभया शो।
हितभी उसपितरीकों अपनेभंडारमें रख
नाभया उपरंत माधवभी शनेःशनेः अव।
कों बुधावनेलगा लगाकरके इसदानके
प्रभावसे मेरारोगदूरहोगया शोहनकोंलगा
कहने तुमारे सहायसे रोगरूपीजो आपदा
थी सोतरीहै मैने इसीप्रकार जवजव शोह
नथावे तवतव माधवकेजो अनुचरहैं सोस
भी शोहनकोंसरावें जो तुमारेधर्मसें तुमारी
सहायतासें राजपुत्रकीआपदा दूरहोईहै मा
धवकहे यहजोमेराशरीरहै सोतुमारेप्रभाव
सेरहाहै उपरंत प्रकट शिवकेसाथ माधव
मित्रीकरतनाभया फेरकोईदिनपीछे शिवजो

है सो मोहनकों कहनाभया मोहनजी मुझे
बारंबारमांगना बुरालगताहै तिसथेंजोमेरे
रत्नहैं उनकोंनमही कोंनही मूलसेलेने औ
रनाभीवेचनेहीहै तिसथेनमही मोललेवो
जोनमककेसोहह बडेमूलकेहैं जोनमारेपास
छिनमासी धनहै तेनाहीदेवो इहवातोमोहन
सुनकर मनमें बडा प्रसन्न होनाभया जानता
है यहजोधनहै सो अत्यंतबडे मोलकाहै मे
राधन अत्यंत थोडाहै परमेश्वरने काम बना
दियाहै यह विचारकर शिवकोकहनाभ
या मेराजोसर्वस्वहै सोतुमललेवो तुमारा
धनमेराहूवा फेर शिवकेपासें लिखनकरा
वनाभया फेर जेरनमांगे अपनीलिखन शि
वकोंदेनाभया उसकेमनमें इहहीहै मेरेधन
सेइसकाधनबहुतहैअधिक इसीबातसे लि
खनकरावनाभया फेर शिवने अपनाबर
तुदाकीया मोहन अपनेबरतुदाररहा उपरं
तशिवभी अवरमाधवभी मोहनके धनोको
मिलकरखानेहै पीवनेहैं मद्यादिक उडाव
नेहैं यथेच्छ मालवदेसकिया जोसीजानहैं

इनकोभोगतेहैं आनंदकरतेहैं मोहनकी।
जोकन्याहै सोभी दोनोंकीहै उपरांतकोईस।
माबीतें नऊतेचिरकालसे मोहनको अछ्य
नकी इछाहोतीभई तबउसने इसपिटारीसें
एककनकबेचनेवाले जुहारीयोंकेपासजा
ताभया बजारविषे जोरत्नोंकेततज्ञानतेहा
रेहैं सोलगेकहणे पुरोहितजी इहकिसनेकू
ठाबनायाहूवाहै सजोबडाकारीगरहै जिस
नेइहबनायाहै यहतोकलबकेविंडहैं पीत।
लसेजडे हूवेहैं रती सोनाभीनही लगायाहू
वाहै इसमें नानारंगोके रंगेहूवेहैं यहबात
सुनकर व्याकुलहोताभया मोहन घरजाइ
कर सारीभूषणोंकी पिटारी ल्यावताभया
बतावनेवाले सोसभरत्न तत्वजानने वालि
योंने कहा यहतो सभी कूठाकिसीने बना
याहूवाहै एकमासा सोनाभीनहीलगाहूवा
यहबात मोहन सुनकर जैसेवज्रकके वृत्त।
गिडताहै तैसेगिरताभया मोहन उसीसमे
घरजायकर अपने जामाता शिवको कह
ताभया अपनाधनतूं लेजा मेरायनमुकेद

दे यह्बातसुनकर शिव कहताभया मेरेपास
धनकहां मैनेवोखर्चकीआ मेरेपासतो एककु
ड़िकाभीनहीरही वऊतसमयकर मैनेधनसभी
व्ययकरडाला इहबात शिवकहताभया फेर
शिव और प्रोहित आपसमेंझगडालगेकरणे या
समाधवभीसुनताहै अरंत झगडाकरतेकरने।
राजापास जातेभये राजाकों प्रोहत विज्ञप्ति।
करताभया कहताहै हेराजाकूठेकायमनका
रइहहूवा पीतलकर जडेहूवे अवरअनेकप्र।
कारसंगेहूवे भूषनवनायेहोये मुजेदेकर शि
वनेलूटलियाहां मैंजानतानहीथा इसप्रकार
राजेकों विज्ञप्ति करताभया यहबात सुनके
शिव राजाजांई विज्ञप्ति करताभया हेराजन
मैंबाल्यावस्थामेलेकर तपस्वीथा महाराज इ
सीप्रोहतने बडेबडेजोरसे प्रतिग्रह मेरेसे करवा
या मैनेभी श्राद्धविषे इसकोकहाथा क्या मैं।
लोभाघरो मत्त इनकीमेरेको ज्ञाननही मेंत
पस्वीहों मेरेप्रमाणतो आपहीहो फेरप्रोहत
मुजेकहताभया तेरेकोंक्याचिंताहै मैनेराधन
राखांगा महाराज मैंप्रतिग्रहलेकर इसीकेहाथ

मेंदीयाहै उपरंत मेरेयासों आपही मोल
करलेगया इसीकेपासथा मेंनेतोदेखाभी
नही मोलभी इसीनेकियाहै अभी मेरेपास
इसकी लिखतभीहै मेरी लिखत इसकेपास
है आगे आपसमजो मेरेनिमित्तयाहै इहवा
तांतदखधिवनेकही तबमाधव बोलताभया
है ओहतजी ऐसानकहो मेरेआपमात्रसों
सुनो इसबातमें मेराबडाअपराधहै मेंनेगौ
छतमसैनोनहीलिया अथवा शिवमेंनही
लिया मेरेपिताकाधनथा चिरकालकाधि
सीधनवालेपास चलाहूवा आवतेहूवे मैं
ल्यावताभया सोमेंनेदानकियाहै मेनेनिष
पटकरदानकिया मेरेकोंफलभी ऐसाहीहुवा
रोगमेरा असाध्य दूरहोगया कपटहोतामेरे
मनमो तोयह असाध्यरोगकेसेजाता ओहे
ओहतजी तुमकहतेहो स्वर्णनहीहै अवर
त्नभीनहीहैं पीतलकरजडेहुवे कांचरत्नहैं
तबमेरेकों उत्तकाही फलहो इसप्रकार नि
र्विकारमुखकर माधकहताभया माधकी इ
हबातसुनकर राजा वजीरोंसहित हसताभया

भया अवर माधवकेऊपर प्रसन्नहोताभया राजा कहताभया जिसेमाधवकेभीनही नाजहूशिव। केतिमेहै इसीप्रकारसब सभाकेलोकोनेकहा अवर अंतरमें हसतेभये प्रोहित लजितहूवाहू वा घरकोजाताभया अविकविकहतांहे क्या। अतिलोभकर्के अंधीजोबुद्धीहै सोकिसीकों आपदाके कारणनहीहोतीहै गैर वहजो धूर्तहैं सोआनंदकर्केरहतेभये राजेउजैनकेपासों आमहूवासो प्रसाद उसकर्के सुखकररहतेभये अब कनकरेखाकापिताजोहै परउपकारीराजा उसकों कहतीभई हेपिताजी इसीप्रकार धूर्तजोहैं सो अनेककपटोंकर्के अनेकजाल बिस्तारतेहैं नू पृथ्वीविखेधूर्तजोहैं सो अनेकजालोंकर्के जीविकाकर्तेहैं नू धीवरोंकीन्याई धूर्तभीजालकरलूहवेहैं हेपिताजी इसीप्रकार यहजोब्रह्मणथा। सोक्रउहीकहताभया जोमैनेकनकपुरीदेखीहै यहब्रह्मणभी हमारेकों ठगकर मेरीप्राप्तीचा। हताहै इसीये मेरेविवाहकीचिंता नकरो मेरेविवाहकेवास्ते शंकाबीनकरो मैंतुमारेघरमें कंन्याही वंगीहों देखोक्याहोवेगा जबयहवार्ता

५क२

कनकरेखानेकहा तबपरोपकारीराजा अपनीकन्या
कोंकहताभया हेपुत्रि युवावस्थाविषे चिरकाल
कन्याभाव नहीयोग्यहै दुर्ज्जनलोगहोतेहैं सो
मिथ्याही दोषलगादेतेहैं दुर्ज्जनगुणकोंनहीं
सहतेहैं यहजोदुर्ज्जनहैंन सोउत्तमपुरुषकों अ
वश्यहीकलंकलगादेतेहैं इसबातमें हरिस्वा।
मीकीकथा दृष्टांतहै सोकथामें तुझेसुनाव
ताहों हेपुत्रि गंगाकेकनारे उत्तमपुर नामान
गरहै उहांकोईतपस्वी हरिस्वामी नामवाला ती
र्थसेवानिमित्त रहताभया सोतपस्वी भिक्षाक
र जीविकाकरताभया बडातपकरे गंगाजीकेक
नारे कुटियाबनाईहोईथी तपकरके लोकोंकाम
यहोताभया एकदिनभिक्षावास्ते नगरमें आव
ताभया एकदुष्टनेदेखा दुष्टकेसाथ्या उसकेजो
गुणहैं उनकोंनहीसहसकाथ्या बहुतेलोकोंमें
कहताभया हेलोको तुमजानतेहो किनहीं वे
साकपटीतपस्वीहै इसनेनगरके सभीबालक।
खालियेहैं इतनेमें दूसरादुष्ट उसीकासाथी
देखाभी समझकर लगाकहने मेनेभी लोकोंसे
सुनाहै इसीप्रकार तीसराजो दुष्टहै सोभीकह

ताभया यहवार्त्तासत्यहै अबकवीकहताहै इहों
कीनो वाणीरूपी सूत्रहैसो श्रेष्ठपुरुषोंकेग।
लेको बांधनेवाली होतीहै इसीप्रकार हर।
वार्त्ता साकेतनगरमें प्रसिद्ध होतीभई कर्णपरंप
राकर प्रसिद्ध अत्यंतहोगई अबनगरकेलोक बा।
लकोंको अपनेपाससो बाहरनहीजानेदेते कह
तेहैं हरस्वामी बालकोंकोलेजायकर भक्षणकर
ताहै यहवार्त्ता प्रसिद्धहोगई सर्वत्र फेर उहांके
जोब्राह्मण सोमिलकर सलाहकर्तेभये क्या ह
रिस्वामीको नगरसेदूरकरदेवो इसनगरसे चले।
जावे अबलगकहता इसको कोनकहे जोकहे
गा उसीको भक्षणकरेगा इसभयसे साक्षात्
कोईनही कहताभया फेर दूतोंकोभेजतेभये।
सोजोदूतहैं उससेदूररहकर कहतेभये हेहरि।
स्वामी ब्राह्मनतेरेकोंकहतेहैं इसनगरसेचलेजाव
हबडेआश्चर्यकर कहताभया किसनिमित्त मुके
निकासतेहैं यहबातसुनकर दूतकहताभया तूं
बालकोंको भक्षणकरताहै ओहब्राह्मणकहें।
ऊपरचढकरकहतेहैं यहवार्त्तासुनकर हरिस्वा
मीहैठखड़ाहोकर सभनोंका नामलेकरकहताभया

हे ब्राह्मणो तुमको क्या बुद्धिमोह हुवा मैने किसके
बालक खोये हैं तब यह वार्त्ता सुनकर ब्राह्मण
आपसमें विचार लगे करणे मनुष्य सभनोके घरमें
भेजने भये सभी कहने लगे साउ बालक सभी राजी
अपने अपने घर हैं अब जहां जहां सुना था उ
सका बालक भक्षण कीया है उह सभे नचारके लो
क कहन भये हमारे बालक तो प्रसन्न हैं तब
यह वार्त्ता उनोने सुनी तब ब्राह्मण अवर व्यवहा
री लोक लगे कहने अहो हम बडे मूरख हैं हम
ने व्यर्थ इस ब्राह्मणको कलंक लगाया है सब
नोके बालक प्रसन्न अपने अपने घर हैं किस
के बालक इस तपस्वी खोये हैं तब हरिस्वामी की
शुद्धि होई तब उस नगरसे जाणे कों तयार होता भ
या कैसा था हरिस्वामी झूठोने लगाया जो था झू
ठा कलंक उससे विरक्त हृदय हुवा हुवा जहां
अविवेकी पुरुष होवे तहां मनस्वी पुरुषों की प्र
सन्नता कैसे होवे जब जाने कों तयार हुवा तब उ
हां के जो व्यवहारी हैं अवर ब्राह्मण उनोने चरणो
ऊपर सिर धरके उसको क्षमा करावते भये बडे जोर
से तपस्वी कों जाणे नहीं देते भये सो हरिस्वामी कथं

चित रहतेवास्तेनमानतीभया हेपुत्रि इसप्रका
रसत्पुरुषोंके श्रेष्टआचारदेखनेसे दुष्टपुरुषद्वेष
करकलंकलगातेंमें तयारहोतेंहै मिथ्याही दूषण
करतेहैं बहुतकर यदिउलटथोराभी दोषदेखें तो
जैसेप्रज्वलित अग्निमें तृणथासुकीन्याई दोषोंको
करदेतेहैं तिसथे हेपुत्रि तदनंतरमेरेमनकाडःख
दूरकरियावाहै तोयहजोतेरीयुवावस्थानवीनहै
इसेंचिरकालपर्यंत कन्याभावसेबनकों तूनही
योग्य स्वेच्छाकरवर्तनतेरानहीयोग्यहै किवइस
बातमें दुर्जनबडाकलंकलगावेंगे यहबातरा।
जपुत्रीसुनकर उसीबातविषेनिश्चयवाली राजेकों
कहतीभई हेपिताजीक्षत्रियहो अथवाब्राह्मणहो
वे कनकपुरी जिसनेदेखीहोवे उसकोंतुमने
नेतने आगेहीकहाहूवाहै उसतांईमुझे विवाह
देवो यहबातराजासुनकर जानतीहै इसकन्या।
काहठनिश्चयहै मेरीकन्या अवश्यजातिस्मरहै
इसकेमनोकेवास्ते और उपायकोईनही ढंढोरा
हीउपायहै कोईनकोई बोलेगा मैनेदेखीहै य
हनिश्चयकर परदेसीलोकोंके हरूनेकेनिमित्त।
नितहीनगारा अवर ढंढोराफिरावनाहै श्लोक योवि

मा:लवियोवा नवकनकपुरी इछवान्सो मिथनान्
नस्मैराजा किलखी वितरतितनयां योयोवराज्येनसाकं
इसकाअर्थ ब्राह्मणहोवे अथवा क्षत्रियहोवे
सोकोई जिसनेकनकपुरी देखीहोवे राजाउसकी
ई कन्याकोविवाहदेवेगा श्रवर योवराजभीदेवे।
गा यहसबवकरकोईभीनहीकहता सोमेनेसुनी
है श्रोर देखनीचाहताहै इसनेमें वहजो शक्ति।
देवथा जिसने आगेकुछकहाथा सोशक्तिदेव।
मनमें बडाडु:खीहुवाहुवा मनमेंचिंतनकरता
भया मेनेमिथ्याही कनकपुरीकादेखणाकहा
अपमानमेनेपाया राजकन्यानेमुझकेप्रश्नभई
कुछनहीकहताती अपमानकैसेहोता तिसवेमे
नेकनकपुरीकेनिमित्त पृथ्वीभ्रमणीहै यातेमैने
नगरीदेखी अथवा मेरेप्राणगये तिसपुरीकोंदे
खकरमेराजपुत्रीकों लेमेनेविवाया तोमेरेजीव
णकाबडाफलहै इसप्रकारकीईहै प्रतिज्ञाजिस
ने श्रेसाजोशक्तिदेवब्राह्मणहै सोवर्द्धमानपुरते
दक्षिणदिशाकों अवलंबकरजानाभया क्रमकरके
चलतेचलते विंध्याचलकेवनविषे प्राप्तहोताभया
वहओबडीअटवीहै जैसेअपनीइच्छावडीहै तैसे

ही अटवीहै बडीलम्बी और चौडी रसविषेवल
नाभया मंदपवनकरकै हिलतेजो नवेपत्रहै उनो
करकै मानो आत्माको संजीवनकर्तेहै ओत्माके
साहै सूर्यकिरणोकर नपाहुवाहै मानोबडीम्र।
वाजभयंकर करतेहैं बडेभयंकरजोसिंहादिकोहै
उनोनेमारेजोम्रगहै उनोकीनिद्रासे मानोबडेजो
चोरोंकेनिरस्कारहै उसीकेदुःखसेरात्रिअवर दिन
मेंकालीवनी रहतीहै ओर अपनीइछाकर नपेजो
मरुस्थलहैं उन्कीजो किरणहै उनोकर बडेउ
ग्रजोसूर्यकेतेजहैं उन्कोजीतलेतीहै जलकेनाम
कीभीजहांसंगतीनही ऐसीबीजोअटवीहै अटवी
घोरवनकानामहै जैसेजैसे उसआपदाविषेच।
लताहै तैसेहीपृथ्वीमानोवधतीजातीहै बडेनदि
नोसेबडेभारीमार्गकोंलंघकर एकसरोवरकोदेष
नाभया अत्यंत शीतलजलवाला बडानिर्मल।
मानोश्वेतजोकमलहै सोईखिलखिलियाहुवाहै शोभा
यमानजोहंसहैं सोईमानोचामरहै मानोसभनो
सरोंकाराजाहै उसमेशांतिदेवस्नानकर्ताभया फेर
उससरकेउत्तरपासे एकआश्रमदेखताभया सफल
और सघनवृक्षोंकरशोभताहै उहांएक पीपलके

पेड़तले तपस्वीयोंकेसहित सूर्यतपानाम एकत
पस्वीबैठा हुवादेखनाभया कैसाहै वहसूर्यत
पा रुद्राक्षमालाधारीहुई मानो तपनीतोअवस्था
है उनकीमांग्रथीलगीहोई जरावस्था कर्णपर्यंत
आईहुई उसकरकैअत्यंतशोभताहै उपरांत शक्ति
देवप्रणामकर उसकेपासजानाभया सूर्यतपानेभी
अतिथिसत्कारकरके आदरकीया कहतानभया।
हेभद्र कहांसेतूआया अवर कहांजावेगा।
यहहमकोकहो शक्तिदेवकहनेलगा हेऋषी
जी वर्द्धमाननगरसेआयाहूं और कनकपुरीमें
जेजाताहूं मैनेप्रतिज्ञाकरीहोईहै हेमहाराजख
बरनहींकहांहै जोआपजानतेहो तोमुझेबता
वो इसप्रकारनसुहोकर शक्तिदेवकासुनताभया
मुनिकहताहै हेवत्स आठसौवर्षमेरेको इहां
रहतेहोगयेहैं तू सोनगरीमैनेकानोंसेभीनहीसु
नी जवइहवातसुनी तबशक्तिदेवबड़ादुःखीहो
तभया लगाकहने तोमैंमरा पृथ्वीभ्रमनेभ्रमते
उपरांतमुनीने जबसंपूर्णवातसुनी तबफेरश।
क्तिदेवको कहताभया हेशक्तिदेव जवतेरेकोनि
श्चैहै तोजोमैंकहताहूं सोसुनकर इहांसेतीनसौयो

नगकांपिल्यनाम देशहै उहां उत्तरनामाप
र्वतहै उहांभीआश्रमहै उहां मेरा बडाभ्रा
दीर्घतपा नामहै उसकेपास जावो वहजान
ताहोवे कदाचित् यहबात सुनकर शक्ति
देव उस आशावाला हुवाहुवा रात्रि
उहांही रहता भया सवेर विताय कर शक्ति
देव प्रातः उहांसे जाताभया बडेबडे
श पायकर अनेक अनेक बनोंकों अनेक
पर्वतोकों लंघकर कांपिलदेशोंकों प्राप्त
होताभया फेर उत्तरपर्वतकों चढकर उ
हां दीर्घतपा जोमुनिहै उसकों मल्लमकर
आश्रमविषे बैठाहुवा उसकेपास बैठताभ
या उसनेभी उसका अतिथिकरा तदनंत
र शक्तिदेव कहताभया महाराजमेरेकों
कनकपुरी बतावो राजकन्याने कहीहुई
है मैं देखने वास्ते चलाहुवाहों सो मैंन
हीजानता कहांहै सो पुरी उहां मेंने अव
श्य जानाहै इसीवास्ते अग्रजो सूर्यतपाहै
उसने तुमारेपास भेजयाहों ऐसे जब शक्ति
देवने करा तब दीर्घतपा जोऋषीहै सो

सोकँताभया हेपुत्र मैंनेएती अवस्थामें का
नकपुरी नहीसुनी यहां बडेबडे बपारीआ
वतेहैं मैंनेतो कदीभी किसीसे श्रवणकिया
उस्कादर्शनतोकहां मैजानताहों कहींदूर
द्वीपांतरोंमें होवेगी उसमें उपायमें बता
वताहों सोतूं सुण समुद्रके मध्यविषे उत्स
लद्वीपहै उसमें सत्यव्रतनामा धीवर राजा
है उसने वहनगरी देखीहोवे अथवा सुनी
होवे तिसथेंतूं समुद्रकेकनारेजा वहांवि
टंकपुरनामानगर सोराजा बडेधनवाला सबनां
द्वीपांविषेजाताहै सोवहांआवताहै तहांतूंजाइ
किसीव्यवहारीकेसाथ जहाजमेंबैठकर उस
सत्यव्रतकेपासजा उहांतेरा मनोरथहोवेगा
यहबातसुनकर शक्तिदेव ऋषीकोंप्रणामकर उ
स्कावचनमान चलेजाताभया बहुत बहुत दे
देश बहुतपर्वत लंघकर विटंकपुरमें प्राप्त
होताभया कैसाहै विटंकपुर समुद्रकामा
नोतिलकहै वहां एक वणिया नाम समुद्र
दत्त उसने उत्स्थलद्वीपकों जाणाथा उसके
साथहोकर उसीके जहाजऊपर चढनाभ

या उस्केसाथप्रीतहोगई शक्तिदेवका वर्द्धउ
सीसमुद्रदत्तनेपाया समुद्रस्तेचलतेभये स्र
बयोडेदिन द्वीपकों पोंचनेकोंरहे अकस्मात्
मेघरूपीराक्षस प्रगटभया कैसाहै मेघराक्षस
बिजलीहै चंचलजिव्हा जिसकी गर्जना करता
है मानोकोटेजोपदार्थहैं उन्होंकों बधावताहै
अरुजेजो पदारथहैं उनकों छोटेबनावताहै
इतनेमें प्रचंडजोपवनहै सोभीलगाहैचलने मा
नोविधाता क्रोधीहुवाहै पवनकरहतहोई जोल
हरांहैं सोउठतीभई मानोंलहरानही इहपखों।
वालेपर्वतहैं आश्रयजो समुद्रहै उस्केक्षोभसें
क्रोधीहुवे बाहरनिकसेहैं वहजोजहाजथा सो
क्षणमें ऊपरकों जाताहै क्षणमें हेठ लगजा
ते मानोयेंको बतावताहै जोऊंचाहोता सो
नीचा होजाताहै क्षणमात्रमें ब्यवहारियोंके
कलकलकर जहाज भरजाताभया मानों
कलकलके भारसें टूटपरताभया जब ज
हाज टूटपडा तब जहाजका स्वामी समुद्र
दत्त समुद्रमें पडताभया दैवकर उसको एकज
हाजका तख्ता मिलताभया उस्केऊपरचढा।

ई॰ क॰ २२

कर श्रीरजहाजआवताथा उसकुपरचढक
र बचनाताभया शक्तिदेव जबसमुद्रमेंपडा
उहां एक बडाभारीमछथा मुखखोलकर व
लताथा उस्नेसहजनही निगललीया सोमछ
खेलाकर चलताहूवा दैवयोगथें उत्स्थ
लद्वीपमें आपडचा उहां उससत्यव्रतके म
छुवरोंने पकडलीया दैवयोगथें सोराजेके
जो नौकरहैं सो उसमछकों राजेपासल्याव
नेभये सत्यव्रतनेकहा इस्को पाटनकरो के
र उनों व्रतोंने मछपाडा जब उस्केउदरका
पाटन कीया उहांसे शक्तिदेव बडेचमनका
रमय उसदीरघमछके उदरसे ईश्वरकृपासे जी
वताही निकसा कैसाहै शक्तिदेव अनुभूतकि
याहै मत्स्यकेउदरविषे गर्भवास आश्चर्यक
रनेवाला जिसने जिससमेनिकसा उसीसमे
सत्यव्रतकों स्वस्तिकार कर्ताभया जब सत्य
व्रत शक्तिदेव गुवाकों देखताभया तबप
छताभया तंकोंनहै यहमत्स्यकेउदरविषें कै
से प्राप्तभया है ब्राह्मण यहतेरा दृतांत अडु
नकोंनहै हमकोंसुनावो यहवार्त्तासुनकर जी

वरोंकाजोराजाहै सत्यव्रत उसकोंशक्तिदेवा
जोहै सो सुनावताभया हेराजा वर्द्धमाननगर
से आयाहों ब्राह्मण शक्तिदेव मेरानामहै मैनेअ
वश्यकनकपुरी देखनीहै इसीके निमित्त मैने
पृथ्वीभ्रमीहै चिरकालपर्यंत उसनगरीकोंकोईन
हीजानता फेर दीर्घतपानाम ऋषीनेकहा वहन
गरी द्वीपांतरोंमेंहोवेगी हेसत्यव्रत मल्लाहोंकारा
जाहै उसकेपासजा उसस्थलद्वीपमेंरहताहै फेरमें
उससत्यव्रतकेपासजानेकेनिमित्त समुद्रदत्त व्य
वहारीकेसाथ जहाजमें चढा बीचमें वर्षाओ
रपवन उसकर्के जहाज टूटगया इसीमत्स्यने
इहां पोहचायाहैं ऐसाजब शक्तिदेवनेकहा तब
वहसत्यव्रतकहनेलगा हेब्राह्मण सत्यव्रततोमैं
हीहों द्वीप उसस्थलभीयहहीहै किंतुमैने बहुत
द्वीपदेखेहै परंतु कनकपुरी मैनेनहीदेखी नकि
सीपाससोंसुनीहै यहबात सुनकर शक्तिदेव बडा
खीनहोताभया उसकों खीनहोयेकों देखकर स
त्यव्रत अभ्यागतप्रीतिकर उसकोंकहताभया हे
ब्राह्मण आजतुमरात्रि इहांहीरहो प्रातःतेरेमनोर
काउपायकरोंगा ऐसेसत्यव्रत उसकोंआश्वासनकर्के

ब्रह्मलोके और अभ्यागतोंके लिये मठ बना
याहुवाथा उहांभेजा उहांएक ब्राह्मणथा उ
सने भोजनकरवाया शक्तिदेवकों उसकानाम
विष्णुदत्तथा वहउसकेसाथ बातांकरताभया
बातांकरने शक्तिदेव अपनाकुल अवरनाम
अवरगोत्र सुनावताभया यहसुनकर विष्णुद
त उसकों गलेलगायकर अश्रुधाराकर गद्गद
अक्षरोंकर कहताभया हेशक्तिदेव तूंमेरेमामे
कापुत्रहै मेरातूंभाईहै मैंतेरीभूवाकापुत्रहूं मेरा
भीदेशवर्द्धमाननगरहै मैंबाल्यावस्थाहीमें इहां
आयाथा फेरइहांहीरहा तिसथेतूंइहांहीरहो
थोडेदिनोंमें समुद्रदत्त तेराकार्य्य करदेवेगा इस
केपास बडेबडेही पांतरांथें व्यवहारी आवतेहैं
यहबात कहकर अपना वंशगोत्र सुनाकर अने
कपदारथोंकर भोजन करावताभया बडेआदर
पूर्वक सेवाकरताभया शक्तिदेवकों जोरस्तेका
श्रम अवरखेदथा सोदूरहोगया कविकहताहै
परदेशविषेजो बंधुकालाभहै सो जैसेमरुस्थल
विषे अमृतवर्षाहोवे तैसाहीहोताहै मनमेंमा
नताभया मेराकार्यनिकटहीआयाहोवेगा किवका

र्यविषे जोकछुमंगल प्राप्तिहोनाहै सोकार्य
कासूचन करदेताहै शय्याविषे थोईभ्रांता
सोय शक्तिदेवकों निद्रानहीत्रावती चिंता
कनकपुरी दर्शनविषेलगाहूवा शक्तिदेव
केपास सोयाजो विष्णुदत्तहै सो उस्केविनोद
केवास्ते अपूर्वकथासुनावताभया

अथतृतीयकथाप्रारंभः

हेशक्तिदेव प्रादिविषे एक गोविंदस्वामीना
मवाला ब्राह्मण धनीहोताभया यमुनाजीके
किनारे राजाकादियाहूवा अग्रहारथा अग्रहा
र गेहरकों कहतेहैं उहांही रहताथा उस्कीस्त्री
विषे दोयपुत्रहोतेभये अपनेसदृश्य गुणवा
ले आपभीगुणीथा एककानाम अशोकदत्त
दूसरेकानाम विजयदत्तथा उहांसमयकर
बडा दुर्भिक्ष होताभया उस्कोंदेखकर गोविंद
स्वामी अपनीभार्याकों कहताभया हेपत्नि
दुर्भिक्षकर लोकतोनष्टहोगयेहैंन देशनष्टहो
गया मेंतोअपनेबांधवोंका अवर मित्रोंका दुः
खनही सहसकता नित्यकितनादेणाहै धन
भी देखोडाहै अन्नभीमेंदेतारहा अबकितनाकि

सकोंगे तिसवेजितना हमारेपास अन्नहै
सोबुलाकर देखोउंगे बंधुमित्रोंताई हमबा
गलसीकों रहणेवाले जावेंगे भार्यानेभीमा
नलिया फेरजितनाअन्नथा सो बांटदीया बं
धु अवर मित्रोंताई तदनंतर भार्याउरभृत्य
सहित अपनेदेशथें काशीकों जातेभये अवक
विकहताहै श्रेष्टजोपुरुषहैंतेन सो अपने संबंधी
योंकी आपदाकों नहीसहसक्तेहैं फेरचलेचा
लते एक महाव्रतीकों देखताभया कैसा
है जटाधारी भस्म सारेलगीहोई कपालहा
थमें लियाहूवाहै जैसे अर्द्धचंद्र धारकरशि
वजीहोवे तैसेहीथा गोविंदस्वामीनेजाना यह
ज्ञानीहै फेर उस्केपासजाके पुत्रोंका शुभाशुभ
पूछताभया सोजोयोगीस्वरहै सोकहताभया
हेब्राह्मन तेरेपुत्र वडेभाग्यवानहोवेंगे परंतु इह
जो विजयदत्तहै इस्का वियोगहोवेगा यहजो
दूसरा अशोकदत्तहै इस्केप्रभावसें फेरमि
लेगा अशोकदत्तकर तुमारासमय सुखकरबी
तेगा तदउस ज्ञानीनेकहा तब गोविंदस्वामी सु
खभी औरदुःखभी आश्चर्यकरभी देखताभया

उसकों सुखकर जाताभया शनैः शनैः कोई
दिनोंकेबीते काशीमें मासहोताभया बाहर
चंडिकाजीका मंदिरथा उहां स्नानकरनेकर
ते दिनबीतगया सायंकालभी भीतताभया
उहांहीसकुटुंब रहताभया अवरभी परदेशी
लोक उहांरहतेभये वृक्षकेतले पत्रवासवि
छाकर सोवतेभये रसोकेथकेहूयेथे इत
नेमें छोटाजो बिजैदत्तहै वहजागताभया
उसकों अकस्मात शीतज्वरचढताभया वही
मानो बंधुकेसाथ वियोगकाकारण होताभ
या मानों उसीभयकर रोमरोम खडेहोनेभ
ये अत्यंत शीतकर व्याकुलहोकर अपने
पिताकों जगावताभया लगाकहने हेपिता।
जी मेरेकोंशीत बहुतव्याकुल करताहै मेरेकों
अग्निप्रज्वलित्यादेवो तदमेराशीत दूरहोवेगा
अन्यथा मेरेप्राण नहीरहनगे येवार्ता गोर
विंदस्वामी सुनकर कहताभया हेवत्स या
मिनीसमयमें कहांसेल्यावों यहवार्तासुनकर ति
सैदत्तकहनेलगा हेपिताजी वहदेखो निकट
ही अगनबलतीहै वहीअग्निप्रज्वालितहै उहां

हीलायकर अंगोंको तपावोंगा मेरेपासों के
पवार चलननहीहोता मुझे हाथपकड़करले
जावो यहवार्तासुनकर पिताफेर कहनेलगा
हेबालक यहतो श्मशानहै यहतोचिताबल
तीहै वहांकैसेजाणा तूबालकहै यहतोपि
शाचादिकोंकर दूषितहै पिशाचादिकहैं यह
वार्ता सेरवाली पिताकीमनका शूरवीरजो
विजेदत्तहै हसकर आक्षेपकर कहताभया
हेपिताजी जीवजो पिशाचादिकहै उनोंनेमे
रक्षाकरणीहै वहतोधैर्यसें रहितहैं तिसथें
मुझेलेजावो इसप्रकार हठकर कहनेमें बल
गा तबवहजो पिताहै सो विजेदत्तको लेजा
ताभया फेरउसचिताकेपास पहुंचतेभये मा
नोंकहतीहै चिता मैंनहीहों साक्षात् राक्षसोंकी
अधिदेवताहों कैसीहैं अग्नकीयां जोज्वाला
हैं अवरजोधूमहै वहीहैकेस जिसके फेरकै
सीहै मनुष्यमांसको ग्रहण करणेवालीहै
तदनंतर वहबालक अंगोंको तपावताभया
फेरपिताको कहताभया हेपिताजी चिताचि
षें वसान्तमहोनाहै उस्कोंवही वसन्तगाभास

मे इसीसें एकजाभया चिताकहतांहै हेपुत्र
चिताविषे मनुष्यका कपाल जलताहै वह
जो विस्मयदनहै सुनकर चितासें लकडी
उठायकर कपालको फोडताभया कैसाहै
वहबालक बडाहठीथा तदनंतर वहजोक
पालफूटाहै उसमेंसे कोई पेसाभर वसा
नामचिंकू उसकेमुखमें आयपडा मानो श्म
शानकी अग्निने राक्षसाकी सिद्धीउसको दे
ईहै उसवसाके खायकर वहबालक तत्का
लमें राक्षसहोगया कईजिसकेकेशहैं नीला
ख्यरू हाथमेंलीयाहूवाहै बरेदांतोंकर बडा
विकरालहूवाहै उसीसमय कपालको नि
कासकर उसमेंजो वसाथी उसको चाटता
भया अग्निसेडरनानहीं जलतीबलतीकोरी
चाटलिया जिह्वाकर्के कैसीहैजिह्वा कपा
लकीजो अस्थिहै उसकोंभी अग्निलगीहोई
है उसकर्के महाचंचलहै मानो अग्निश्रवर
जिह्वा एकवहीहै फेरकपालकों चाटकर तर
बार निकालकर अपनानाचपीताहै गोविंदसा
मी उसकोंमारनेकोंचाहताभया इतनेमें एमा

६ क. २६

प्रानसे श्रवाज श्रावतीभई क्या हैकपाल फोट यह्वार्त्तासुनकर पिताको नमार मा तापिता सबनोंके इजनीयहै इयरसे हमा रेपास चलेश्रावो यह्वार्त्ता जबसुनी श्र वर श्रपनानाम कपालफोटपायकर पिता कों छोडकर राक्षसबणकर श्रपनानाम या उस्काजोपिताहै सो देवपुत्र हैगुणवाले। हाबिजयदत्त उसप्रकार रोतारोता उसेकों श्रावताभया जहां चंडिकाजीका मंदिरथा सवेरे रात्रिका जो व्यवहारथा सो श्रपनी भार्याकों श्रवरपुत्रको सुनावताभया जैसे बदलनें बज्रपडे तैसेही बड्बानसुनकर। होतीभई शोकरूपीजो श्रग्निहै सोसभनों कों व्यापकरतीभई श्रेसाडुःख होताभया जैसे काशीकाजोलोकहैं इजनको श्राया हवा सोभीउनकों देखकर बडेडुःखीहोते। भये फेरकोई व्यवहारी समुद्रदत्तनामवाला चंडीसेवी सुजनकरणेवास्ते श्रायाहुवा उस ने गोविंदस्वामीदेखा बडाडुःखीहुवाहुवा फेरउसको श्राश्वासनकरके श्रपनेघरकों ले।

जाताभया सकुटुंबको फेर स्नानादिकोंकर गो
विंदस्वामीको टहलकरतावताभया यह सत्पु
रुषोंकास्वभावहीहै जोदुःखी पुरुषोंकेउपर
दयाकरणी गोविंदस्वामी उसीकेघरमों पेर्य।
थारताभया स्त्रीअवर पुत्रसहित वहयोगीस्वर
था जिसनेकहाथा तेरेकोंकतिकपुत्र केसाथ
वियोगहोजायेगा फेरबडेपुत्रडारामिलेगा
उसीकेवचनऊपर गोविंदस्वामी धीयारता।
ताभया तदनंतर उसस्त्रियोलेकर उसीग्रा
हकेघरमो रहताभया उहांरहकर बगनेपु
वहै सोविद्यापडताभया सारीहीशास्त्रविद्या
अवर अस्त्रविद्याभी पडताभया पुत्रभीहो
ताभया जैसे पृथ्वीविषें किसीमल्लसेनही
जीताजाहै एकसमय काशीविषे देवयात्रा।
थी उसविषे मल्लइकठेहोतेभये वहां दखिण
देशथे एकमहामल्ल प्रसिद्धथा मल्लोंमें सो
आवताभया वहांकाराजा प्रतापमुकटथा
उसके रोबरो सभीमल्लहरायदिये राजाकेजो
मल्लथे सोभी उसमल्लने जीतलये राजाका
मन बडाखिन्नहोताभया तदनंतर किसीनेरा

ताकोंकहा हेराजन् तेरेदेशमें सहूकारके
घरमें कोई परदेशी ब्राह्मणरहताहै उसका
पुत्रहै सोबडामल्लहै काशीविषे उसकेसमा
कोई नहीहै यहवार्त्ता सुनकर राजा उससा
हूकारकेद्वारा अशोकदत्तकों ल्यायकर उस
मल्लकेसाथ युद्धवास्तेकहताभया वहजोब
डामल्लहै सोभी अवर अशोकदत्तभी अखाडी
करतेभये भुजोंकेसाथ भुजोंको जोडकर ब
ललगावतेभये अशोकदत्तने उसमल्लको भु
जोंसेंपकडकर डायलीया तलमात्रमें वहर
जोबडामल्लहै सोपृथ्वीऊपर बडाशब्दकरगि
रताभया मानोपृथ्वीभी उसअशोकदत्तकों
साधुवाददेतीभई सोजोराजाप्रतापमुकटथा
तिसने अशोकदत्तकों रत्नोंकरकेपूर्णकर
देताभया राजा बडाप्रसन्नहोताभया राजेने
अपनेपासराखा नौकिरी उन्कोबनायदीनी
राजाने उसकापराक्रमजोदेखा उसकर उसकों
अपनामुसाहबबनाया वह अशोकदत्तभी
राजेकेप्रियहोनेमें थोडेदिनोंबादही लक्ष्मी
कापात्रहोताभया कविकहताहै विशेषकर।

जो राजाहै सो शूरवीरोंका अवर विद्यावाले।
जो पंडितहैन् इनका विधिरूपहोताहै सो राजा
एकसमै कृष्णपक्षकी चतुर्दशी वालेदिन अ
पनेशिवोंका मंदिर बनायाहुवाथा उसकीपू
जाकरनेकोंगयाथा फेर शिवाकीपूजाकरके
सायंकाल राजा श्मशानकेनिकट होकर
चले आवताथा सो एकअवाज श्मशानसे
हुईथीं सुननाभया क्या हेराजन् तेराजो दे
पियनीहै उसमेंमुझे सूलीमेंदीयाहै उसकीअ
पापमुझे लगायाहै तीनदिन होगयेहेन्
मेंजोपापीहों उसोपापकर्मोकर मेराजीवनि
कसतानही हेराजन् मेरेकों तृषावडीलगीहै
मुझेजलपिलाइ अवाज सुनकर पासजोअ
शोकदत्तहै उसकोंराजा कहताभया हेअशो
कदत्त इसकोजल किसीपुरुषकेद्वारा भेजदे
वो उसकोपिलायआवे अशोकदत्त कहताभ
या हेराजन् इसरात्रिमें कौनजायेगा मेंआ
पहीजावोंगा यहकहकर जललेकर अशोक
दत्तजाताभया राजा अपनीपुरीकों आवताभ।
या तदनंतर अशोकदत्त श्मशानकों प्रवेश

करताभया कैसाहै वह श्मशान बडेअंधका
रकरव्याप्तहै अवरकैसाहै शिवजोहै उनोने
त्यागाहूवा जोमांसहै खिलाराहूवा मानो
संध्याको बलीदेताहै कहीकहीं मसानका।
शवालेजो दीपकहै उनोकर प्रकाशहूवाहू
वाहै कहीकहीं बेतालनृत्यकरतेहैं उनोके।
जो हाथोंकेतालहैं सोईहैवाद्यजिसविषे फे
रकैसाहै मानोकृष्णपक्षकीजो रात्रेहै उसका।
वरहै उसमेप्रवेशकर हाकमारताभया कहता
है किसनेराजेसे जलमांगा यहबडे ऊंचेस्वरक
र कहताभया फेर एकजगासेसुनताभया जो
मैनेमांगाहै तिसशब्दके अनुसार जाताभया
जायकर क्यादेखताहै चिताजलतीहै उहांही
एकपुरुष सूलीविषेवेधाहूवाहै उससूलीके
हेठ एकबडी अद्भुतसुंदर भूषणोंकर सहित।
रोतीहै ऐसीस्त्री कदीनहीदेखीहोई सर्वांगसुं
दरीहै उसकोदेखताभया मानो कृष्णपक्षवि।
षे क्षीणहोहूवाचंद्रमा उसकीमानो किरणहैं
सो चिताकेचढनेवाले आईहै उसकोदेखकर
अशोकरत्नकहताभया हेमातातूकोनहै और

इस वनस्थानविषे अंधकारविषे रोती कि सवास्ते है तबहुबातसुनी तबवह इस्त्री सलीकहने हे पुरुष यहपुरुषहे सलीदी याहुवा इस्त्रीमें भार्याहूं कैसीहों मैं बडी दैर्भाग्यवालीहों यहमैने निश्चयकियाहु वाहै तब इस्के प्राण निकसेंगे तब इस्के साथमैने सतीहोनाहै प्राणजातेको देख तीहों सो तीसरादिन हुवाहै इस्के प्राणजा तेनही वारंवार जलमांगताहै सोजलमे नेल्यायाहुवाहै परंतु सलीऊंचीहै मैं इस्के मुखतलक नहीपोंहुचतीहों यहवार्तासुन कर वीरजी श्लोकदक्षहै सो कहतामया हेमाता राजाने इस्केवास्ते जलमेरेहाथ भेजाहै सोतूं मेरे पीठकेऊपर पावधरक र इस्के मुखविषे जलदे सुवर्तकहे परपु रुषकेसाथ स्पर्श मैंकेसेकरों तोहेमातः (आपदाविषे इसवार्ताका दोषनहीहै यह बातसुनकर उहइस्त्री मानतीभई जलपात्र लेकर दौईपट्ट उस्केपीठपर धरकर चढ जातीभई जलमात्रमें रकके बिंदु पडतेभ

ये नखरूकविंडु उस्केऊपरपडे अवर हथ्थी
ऊपरपडे तबमुख उठाकर अशोकदत्त देख
नेलगा तावत् वहवीर क्यादेखताहै वह
स्त्री छुरीकर उसमुडदेका जोमांसहै उस्को
कतरकर खोवतीजातीहै तदनंतरजाणा यह
कोराक्षसीहै अवचाहताभया इस्को हथ्थीवि
र्हें गिडायकरमाडूं फेरउसइस्त्रीकेजो पैरहैं
गहांसे पकडताभया मारणकेनिमित्त कैसे
हैं उस्केपैर जिनोंमेंनूपुर शब्दकरतेहैं जब
उसने हथ्थीकेऊपर गिराई अवर उस्केपैर
पकडे तबवहराक्षसी अपनीमायाकर छुडा
कर आकाशकों उडजातीभई फेरउस्केचरण
काजो नूपुरहै सो अशोकदत्तके हाथमोर
रहगया मानोंखेचनेके भयसें उसकेपास
चलेआया तदनंतर अशोकदत्त चिंतनक
रताभया मेरा इस्कामेल दुर्जनोंकीसंगतीकी
तरहहूवा क्या आदविषे बडीकोमल मध्य
विषें हठकरणेवाली अंतविषे महाघोरभ
यदेनेवालीहूईहै दुर्जनोंकीसंगतीभी ऐसी
ही होतीहै इसप्रकार वहस्त्रीजो अदृश्यहो

गई है उसकों चिंतन करता है अवर हाथमें
नूपुर पड़ा है उसकों देख आश्चर्यवाला होता
भया उसस्त्रीकी इच्छावाला भी होताभया
अवर नूपुर देखकर प्रसन्न भी होताभया न
दनंतर श्मशानथें घरकों आवताभया नू
पुर लेकर फेर प्रभातसमें स्नानकर राजा
पास जाताभया तब राजा पूछताभया हे अ
शोकदत्त वहजो स्त्री विषे दीयाहूवा जल
मांगताथा उसकों जलपिलायाथा के नहीं
वह अशोकदत्त राजाका वचनसुनकर व
हजो नूपुर है सो राजाकों देताभया राजाने
पूछा हे अशोकदत्त यह नूपुर कहांसे ल्या
या फेर वहजो रात्रिका वृत्तांत है सो
संपूर्ण राजाकों सुनावताभया तदनंतरर
जा बहुत प्रसन्न होताभया आगेंहीराजा उसका
बलदेखकर प्रसन्न हूवाहूवाथा फेर ऐसी
शूरता देखकर अवर उसकाधैर्य सभनोंसे
अधिक देखकर अत्यंत प्रसन्न होताभया ति
सकेउपरांत राजा प्रतापमुकुट उसनूपुरकों
लेकर राणीकों देताभया अवर अशोकदत्तका

र.क.
१०

नोआश्चर्य वृत्तांतहै उस्कोभीसुनावनाभया वहजोराणीहै सोवृत्तांतसुनकर श्रवर वहजो रिव्यवृपुरहै उस्कोभीदेखक र श्रशोकदत्तकी जोश्चायाहै इसकरदिन व्यतीतकरतीभई तदनंतर एकांतविषे रा जाराणीकोंकहताभया हेदेवि यहजो श्र शोकदत्तहै सोजातीकर श्रवरविद्याकर श्र वरसत्यकर श्रवररूपकरभी यहबडेसेभी बडाहै यहमेरीजो मदनलेखाहै कन्या इ सकाभर्ताहोवे तोबडाकल्याणहै जैसीसुं दर मदनलेखाहै जैसाहीसुंदर श्रशोकद त्तभीहै यहसंबंधश्रेष्ठहै यहमेरीबुद्धिमें श्रावतीहै वरकेगुणदेखने लक्ष्मी नहींदे खनी लक्ष्मीक्षणभंगुरहै तिसपे हेराणी मैंकन्याकों इसवीरकोंदेवोंगा तबराणीनेर हवाबलनी तब श्रादरपूर्वक भर्त्ताकोंक हतीभई हेराजा इसकन्याकायहभर्ता यो ग्यहै श्रापने श्रच्छाकह्या इसमें मेंश्रापकों एकवार्त्तासुनावतीहों यहकन्या वसंतयात्रा में बागविषे गईहुईथी उहांश्रशोकदत्त

इसने देखा उसदिनसेही इसकामनहरगया उसदिनसे मूर्च्छितहोगईहै नकिसीकोंदे खतीहै नसुनतीहै यहवार्त्ता उसकीसखि योंसेमैंनेसुनी इसवार्त्ताकों चिंतनकरतीहु ई मैंनिद्रावशहोगई फेरप्रभातसमे मेंजा। नतीहों किसीदिव्यस्त्रीने मुझेकहा हेपुत्रि तेने अपनीकन्याके विवाहकीचिंतानहींक रनी इसकापतिप्रशोकदत्तहै इसकापूर्व जन्मकाभीवहहीपतीहै हेपुत्रि तिसथेंइहजो। मदनलेखाहै सो अवरकोंनहीदेनी जन्मां तरोंकी उसकीभार्याहै यहस्वप्नमैंनेप्रभात। हीदेखा फेरमेंजागी जागकर मेंअपनी का। न्यापासगई जायस्वप्नकेज्ञानसे कन्याकों आश्वासनकरतीभई सो महाराज आपने। आज आपहीकहा तिसथेंहेराजन् अशोक दत्तसें साडीकन्याजु़डे जैसेइनकेसाथ उस लतकीलताग्मिले जैसेहीइनकामेलहोवे जब यहवार्त्ताराणीकीसुनी तबराजाने बडे उत्सवकर मंगलकरवाताभया अशोकद त्तकोंबुलाकर कन्यादेताभया राजेंद्रकन्या

प्र.कं. ११

का अवर विधेंद्रसुतका संबंध अन्योन्य शो
भादेनेवाला होताभया किसकीन्याई होता
भया जैसे लक्ष्मीका अवर नम्रताका सं
बंध शोभादेनेवाला होताहै जैसेही अशो
कदत्तका अवरमदलेखाका होताभया ।
एकसमय राणीजोहै सोप्रतापमुकटराजे
कोंकहतीभई हेराजा अशोकदत्तने जो ।
ल्यायाहुवानूपुरहै सोएकनहीशोभताहै
तिसथेंमुझे दूसराघणवायदेवो यहवाणी
राजेकीसुनकर अवर उसनूपुरकों देखक
रके कहतेभये हेराजन् यहदूसरानूपुर ए
थ्वीविषे बणनहीसकाहै यहनूपुरदिव्यहै
अमानुषकारीगरीहै हेराजन् इहजोरत्नहै ।
सोमनुष्यलोकविषे हाथनहीआवते आवें
दीनदर्शीयइहयत्नकरभी बणनाबनावनानही
आवता हेराजन् जहांसेयहनूपुरहाथलगा ।
गाहै जहांही दूसराभीहाथलगेगा इहांनही
होसकता यहबातसुनकर थारोने जबकही तब
राजाअवर राणी दुःखीहोतेभये क्याइसदू
नूपुरहाथनहीआवता अशोकदत्तयहबा।

रानीकीसुनकर राजाबर्णकारा जौ इलाबर्णा
ध्या कहतामया कैसा है पुरसमीवनाहैवो जो
ईसीतरा

नजानकरकहनाभया हेराणी ऐसेही हमरानू
पुर तेरेवासते ल्यावेंगा जबऐहश्रलिताशो
कहनेकरी राजाउसकेहठसे उदासहूवाकह
ताहे खेदसे हमकोंदूसरानूपुरनहीचाहिये
तेनेफेरश्मशानकों नहीजाना ऐसेराजेने
हटायाभी तथापि निश्चयसें शोककरनेते
हीरलाभया वहजोनूपुरहे उसकोंलेकर फेर
जबकुशलपत्नकी वनदेशी आई उसदिन
श्मशानकोंजानाभया कैसाहे श्मशान वि
ताकाजोधूमहे उसकरकेंमलिनजोहस्तहे
उनोंकरकें भयंकरहे फेरकैसेहें हस्तफांसी
लगेहूवेमनुष्य लटकतेहें जिनोंमें मांसोह
लनहीहे यहांसमहे उनोंकरथ्यामरूवाहू
वाहे फेरकैसेहें हवनदीपीवासस उनकेकोढ
रोंकों लगीजोअग्निहे साईहे धूवेजिनके ऐ
साजोश्मशानहे उसविषे उसस्त्रीकोंनहीदे
खताभया मनमेंचिंतन करताहै कैसेउसकों
देखा नूपुरकेनिमित्त फेर एक उपाय मनमें
उसनेकीया महामांसकोंमें श्मशानविषेले
कर फिरोंगा जोकोई मुजेनूपुरदेवेगा उसकों

यह महामांस देवोंगा फेर एक शिव कालील
गाह बाधा उसकों उतारकर पीठके ऊपर धर
कर ढंढोरा फेरता भया कहता है इस महा।
मांसकों कोई मोलसे ग्रहण करो तदनंतर ए
क घरसें अवाज होती भई उसें एक स्त्रीने।
कही होई क्या है बडे धैर्यवाले ले आवो इहां अ
सीलेवेगे इस प्रकार स्त्रीकी बात सुनकर उसी
स्त्रीके साथ जाता भया उहां एक और स्त्री दिव्य
रूपवालीकों देखता भया बडी स्त्रीयां कर व्या
प्त है दिव्य आसन विषे बैठी हुई दिव्य रत्नो
के भूषण पहरे हुवे हैं ऐसी स्त्रीकों उहां स्थि
ति असंभाव्य है जैसे मरुदेश विषे कमलि
नी होवे तिस आदि स्त्रीने उहां पडवाया फेर उ
स दिव्य स्त्रीकों लगा कहने मेरे पास मनुष्य मां
स है मैं बेचता हूं लेलेवो यह वार्ता कहता
भया यह वार्ता दिव्य स्त्री सुणकर कहती भ
ई हे महा धैर्यवाले तेने इसका क्या मोल लेना
है अवर कितने मोल कर देगा है फेर वह जो
अपो कदग्रे है पीठ ऊपर अवशालीयाउवा क
हता भया उस नूपुरकों दिखाय कर जो मुझे।

इसनूपुरका दूसरापैरदेवे उसकोंमैंनेदेषाहै यहबा
तसुनकर वहजोदिव्यस्त्रीहै सोकैहतीभई मेरेपास
दूसरानूपुरहै यहजोपैहलानूपुरहै सोभीमेराही
तेनेंहरयाहूवाहै वहजोश्मूलीमेलगाऊवा पुरुष
था उसकेपासजो स्त्रीतेनेदेषीथी सोमेंहीहां अ
अबमेंने औररूप धाराहूवाहै इसबातसें तेनेंमु
जेनहीपछाना हेवीरमैंने यहमांसक्याकरणाहै
तिसथेंजोमेंकहों सोतूंमाने तदहूसरानूपुर मेंतु
जेदेवोंगी जबअशोकदत्तकों यहबातकही तब
अशोकदत्त कैहताभया हेमाता जोतूंकहेंगी सो
मेंमानूंगा दाणभीनहीलगाऊंगा जबयहबात
सुनी तबवहजोदिव्यस्त्रीहै सोकैहतीभई हेभद्र
हिमालयके एकशिखरकेऊपर त्रिचंटनामापु
रहै सुवर्णका उहांएकराक्षसोंकाराजा लंबजि
ह्वनामथा बडावीरथा तिसकीस्त्री विद्युच्छिखा
नाममेराहै कैसीहोंमें स्वेछाकररूप धारणेवा
लीहों उससें मेरेकों कन्याउत्पन्नहोई नामउस
काविद्युत्प्रभाहै सोजबउत्पन्नभई दैवयोगसें
मेराकदत्तजो पतिहै सोगंधर्वोंकेयुद्धमें कपाल
स्फोटकेआगेंही युद्धविषें मारागया अबयहमारा

राजाकपालस्फोटहै उसनेराज्य उसपुरका मे रेकोंदीयाहुवाहै उसकरके मेंराज्यविषें सुखीरे हतीहों अबमेरीकन्या बडीहूईहै युवावस्थाको प्राप्तहूईहै हेवीरवाहन यौवनविषें प्राप्तहूईहै उसके वरकीप्राप्ति कीमुजेचिंताप्राप्तहूईहै न दनंतर तेरेकोमैंनें राजाकेसाथ चलतेदेखा। कृष्णपक्षकी चतुर्दशीकों सायंकाल तेरेकोंदेख कर मेरेमनमें यहआया यहवीर मेरीकन्याका योग्यपतिहै फेरमेंने मनमें विचारा इसकोंअ पनेपासल्यावणेका उपायकछुकरूं यहवि चारकर शूलीमें दियाजो मनुष्यहै उसकेद्वा रा जलमांगनेके बहानेसें मैंनेंतें श्मशानकों ल्यायाथा वहांक्षणमात्र तेरेकों रूपदिखायके अवरकुठहीगलायकर ठगनीभई युक्तिकरकें तेरेहाथमें नूपुरपायकर अदृश्य होजातीभई मैंनेंतो वहनूपुर तेरेहाथमें नहीपायाथा अब लायाथा तेरेफेर ल्यावणेकों पानीभई सोमैंनें ने आजपायाहैं अबमेरे साथ मेरेघरमेंचल। वहां मेरीकन्याकोंवर नदमेंहूसराजो यहनूपु रहै सोदेवांगी इसप्रकार जबउसराक्षसीनें

कहा नब वहजो वीर अशोकदत्तहै उसराक्षसीकी सिद्धिकर आकाश मार्ग कर्के त्रिघंट पुरकों जाना भया उसपुरकों अशोकदत्त देखता भया कैसाहै पुर हिमालयके शिखरके ऊपरसुवर्णका बणा याहूवाहै मानों आकाशके भ्रमणकर थकाहूवा जो सूर्यहै उसका निर्मल बिंबहै विद्युत्प्रभा नामजो उसकी कन्याहै उसकों विवाहताभया मानो अपनाजोहठहै वहहीजो सिद्धीहै सोमूर्तिधार कर्के प्राप्तभई फेरकोईदिन उसकेसाथ रमताहूवारेहताभया कैसाहै अशोकदत्त सासकीजोसिद्धीहै उसकर प्रसन्नहूवाहूवा नदनंतर वह अशोकदत्त सासकों केहताभया हेसास मुजे वह दूसरा नूपुरदेवो मैंनेकाशीकोंजाणा है वहांमें राजापास प्रतिज्ञा करीहूईहै इसम्यादि नूपुरके सदृश दूसरा नूपुर ल्यावोंगा नबयहबानसुनी नबदूसरा जोनूपुरहै सोअशोकदत्तकों देनी भई अवर सुवर्णका कमलभी देनी भई उसथैंप्राप्तहूवा नूपुर अवरकमल जिसकों ऐसाजो अशोकदत्तहै सोउसपुरसें सासकीसिद्धीकर आकाशमार्गकर श्मशानविषे प्राप्तहोता

भया सासने फेर आवनेके निमित्त प्रतिज्ञा कर
२ वायलई फेरकहतीभई हे अशोकदत्त जबतैंनें
मेरेपास आवणाहोवे तबकृष्णपक्षकी चतुर्द॰
शीवाली रात्रिहुई मैंनित्य आवतीहौं मेरेकों
यादकरणा मैंतेरेकों नजरआवोंगी यहसु॰
णकर उसराक्षसीकों पूछकर चलेआवताभ
या आदिमातापिताकेपास आवताभया आगें
हीछोटे पुत्रके वियोगकर दुःखीथे फेर अ
शोकदत्तके वियोगकर अत्यंत दुखी हूवेहूवेथे
अकस्मात् अशोकदत्तका जोआवणाहै सोपर
मआनंदको देताभया तावत् राजाजोउस॰
का श्वशुरहै सोभीसुनकर उहांही आवता
भया फेर अशोकदत्त प्रणाम करताभया ।
राजा उसकों आलिंगन अंगीकार करताभया
अंगभी कैसेहैं रोमरोम जिनमें उठेहूवेहैं मा
नोदृढीजो जामाताहै उसकेस्पर्शसें भयकरते
हैं राजा बडा प्रसन्न होताभया तदनंतर अ
शोकदत्त सहित राजा अपने मंदिरको आव
ताभया सोजो अशोक दत्तहै सोमानों रूपधा

रकर आनंदही आयाहै फेर राजेकों वहजो दि
व्य नूपुरोंका जोडाहै उसकों देताभया केसा
है नूपुर मानों अपने कणकण शब्दकर अशो
कदत्तकी स्तुतीकरताहै अवर स्वर्णका जोक
मलहै उसकों राजा नाई देताभया केसाहै व
हकमल मानों राक्षसों कीजो भंडारकी लक्ष्मी
है उसके हाथका लीला कमलहै तदनंतर
राजाबडे आश्चर्यकर राणीसहित पूछताभया
नूपुरका अवर कमलके प्राप्तीका वृत्तांत फेर
अशोकदत्त जैसेंनूपुर अवर कमल प्राप्तहूवा
सोवृत्तांत सुनावताभया केसाहै वहवृत्तांत क
र्णोंकों अमृत वर्षा करणे हाराहै विचित्र रुचि
रचितहै अवर लिखणेयोग्य अवर चित्तकों
चमत्कार देणेहारा कविकेहृताहै यावत् हठका
अंगीकार नकरे तावत् शुद्धजो यशहै उसकों
मनुष्यकेंसें प्राप्तहोवे इसप्रकार राजा उसजा
मालाकर आपकों कृतकृत्य मानताभया फेर
राजेकाजो गृहहै उसमेंनगारे अवर नृसिंहे
काहल अवर डफले डफकर पूर्णहो जाताभया

प्रसन्नता कर मानों अशोकदत्तकेजो गुणहैं
उनकों गायन करताहै ऐसे शोभताभया दू
सरेदिन राजाने अपने शहरमें मंदरथा बणा
याहुवा उसकेऊपर रूपेका कलशथा उसके
ऊपर वहजो सुवर्ण कमलहै उसकों चढाव
ताभया वहजो कलश अवर कमलहैं सोआ
पसमें शोभतेभये एकश्वेत अवर एकलाल
मानों राजेका अवर अशोकदत्तका यश और
प्रतापहोवे ऐसे शोभाकों प्राप्तहुवे कलश
औरकमल उनकों देखकर राजा हर्षकर प्रफु
ल्लनेत्र हुवाहुवा शिवभक्तिका जोरसहै उसके
अधीनता कर्के राजाके जिह्वासें यहबान निक
सतीभई राजा परम महेश्वरजीका भक्तहै
वह कैहताभया अहो बडासुंदर कमलकर
ऊचाजो कलशहै सोशोभताहै मानों भस्मक
र शुभ्र शिवजी जैसें कपिलवर्ण जटाजूट कर
शोभतेहैं तैसेंही यहकलश इससुवर्ण कम
लकरके शोभताहै जोऐसा सुवर्ण कमल दू
सरा होताती यहभी दूसरा कलशहै उसमेंच

भावना अपूर्व शोभाहोती इसप्रकार राजेका
वचन सुनकर अशोकदत्त कहताभया हे देव
मेरुसराजो स्वर्ण कमलहै ऐसाही सोल्या
वूंगा यहवाणी जब राजाने सुनी तब राजा के
हता भया मेरेको दूसरे कमलकी इच्छानहीं
हठकर मत कर मेरे मुखसे अकस्मात् यहवा
णी निकसीहै मुझे नहीं चाहिये यह वाणी सु
न करभी अशोकदत्त मनमें राखता भया तद
नंतर कोईदिन पीछे वहजो कृष्णपक्षकी चतु
र्दशीहै सोआवती भई कविकेहताहै मानों
यह बात सूर्य भगवान् मनमें विचार करता
है क्या यह अशोकदत्तकी इच्छा स्वर्ण कम
ल ल्यावणेकी है मानों भयकर अस्त हूवा
उसके उपरंत रात्रिरूपीजो राक्षसीहै उसके
प्रसन्न होनेहूवे अशोकदत्त राजपुत्रीके सोते
हूवे उहांसे निकसता भया कैसीहै रात्रिरूपी
राक्षसी सायंकालके जोलाल बदलहैं सो
मानों ताजामात्र मांसकेग्रास लीये हूवेहैं अं
धकार रूपी राक्षसोंकर संपूर्णदिशा धूम्रवर्ण

हत्र्यांहैं चमक तेजो दीपकहै सोई मानों दंत
८ पंक्ति कर भय देखो हारीहै ऐसे राक्षिका मुख
प्रसन्न होनेही जाना भया उसीश्मशानकों
फेर उसी वट वृक्ष तले उस खास राक्षसीकों
देखना भया उसने बड़ा अशोकदत्तका आद
र किया सोजो खासहै उसजवानकों आका
शमार्ग केरस्ते लेजानी भई फेर सोजो अशो
कदत्तहै सोहिमालयके शिखरविखें वहजो
त्रिकूट पुरहै उसविखें प्राप्त होताभया कैसा

है सुन उसकी जो स्त्री है सो मार्ग को देखती रहती है कि
समय में गर्भवती प्राप्त होवे वहां अपनी भार्या के
पास कोई दिन रहकर अपनी सास को कहता भया
है सास मुझे इस समय सुवर्णकमल देवो कहीं से ला
लायकर यह बात सुनकर उसको सास कहती
भई है अशोकदत्त मैं सुवर्णकमल कहां में ल्याऊं
यह जो सुवर्णकमल है सो हमारा जो प्रभु है कपा
लस्फोट उसके सरविद्दिष्टेन उसीने एक सुवर्ण
कमल मेरे भर्ता को दीया है जब यह वचन सुना
तब अशोकदत्त सास को कहता भया हे तात मुझे
उस सरोवर को ले जा मैं भी वहां से सुवर्णकमल ले
वोंगा वह कहती भई यह बात नहीं हो सकती उस
के गांव बड़े बड़े राक्षस हैं वह इसकी आज्ञा करके
दा करने हैं इस प्रकार उसने हटाया भी तदभी
अशोकदत्त अपना हठ नहीं त्यागता भया तदनंतर
र वे इह उठकर सास ने उहां नीया है ह ये सरोवर को
देखता भया कैसा है वह सरोवर बड़ा ऊंचा जो वर्ष
न का शिखर है उसके ऊपर बनाया हुवा है अब स
वर्णकमलों कर हुवा हुवा है मानो सूर्य के सन्मुख
होनेकर सूर्य की ज्योति हैं सो उनो कमलों ने
पान किया हुवा है वह जो अशोकदत्त है सो तातावी

६ क. ३३ उससमयमेंकमलोंकोलेताभया तावत् वहांकपालीवा
लेजोराक्षसहैनु उनोंनेअशोकदत्त घेरलीया तब
वहजोअशोकदत्तहै सोशस्त्रोंकरउनकोमारताभ
या कैसाहैवहबडावीरहै औरजोराक्षसहै सोभाग
गये भागकरअपनाजोस्वामीहै कपालस्फोट उ
सकोकहतेभये सोजोराक्षसोंकापतिकपालस्फो
टहै सोसंपूर्णराक्षसोंसहित आवताभया वहांआ
यकर अशोकदत्तकों देखताभया फेरमनमें विचा
रताभया यहमेराभ्राता यहांकैसेंआया ऐसेंउस
कोपहछानकर नन्दनाम्नास्वर्धवाला हूवाहूवा। शा
स्त्रकोंत्यागकर हर्षकर नेत्रोंमें अश्रुपातहोनाजा
ताहै नेत्रअश्रुकर भरगए दौडकर उसकेचरणों
के ऊपरशिरधरकर अशोकदत्तकों केहताभया
हेभ्रातः मैंविजयदत्ततेराछोटाभाईहों असीदोई
गोविंदस्वामीकेपुत्रहो एतावत्पर्यंत दैवयोगकर
मैं ऐसाराक्षसहूवा हेभ्रातः चिताकाजोकपाल
मैंनेतोडाहै जिससेंमेरानामकपालस्फोटराक्षसों
नेधरा अबतेरेदर्शनकर मेरेकोंअपना ब्राह्मणभा
वस्मरणहूवाहै वहराक्षसभावमेरा दूरहोगयाहै मो
हकरमेराचेतनन्याकादिनहूवाहूवाथा औसेंनिश्च
धरतकेहूताथा उसकोंअशोकदत्त आलिंगनकर

रताभया अक्षपानोंकर उसकेअंगोंको मानोथो
वनाहै कैसेंहै अंगराक्षसभावसें दूषितहूवेहूवेथे
गोवत अशोकदत्त उसकोआलिंगनकरताईया ता
वत उनकागुरु प्रज्ञप्तिकोशिकनामवाला आकाश
सें उतरकर उहांआवताभया वहांआयकर वहजो
गुरुहै सोदोनोंभाइयोंकोकेहताभया हेअशोकद
त्त तुमसभीविद्याधरहो शापकरकेइसदशाकोप्रा
प्तहूवेहूवेथे अवतुमाराजोशापहै सोदूरहोगयाहै
तिसथें अपनेबंधुकोसदृशजो अपनीविद्याहै सोग्र
हणकरो अवर अपने देशको चलो अपनी^
जोस्त्रिया होतीहै उनोसंयुक्त अपनेघरोंको चलो
यहवचनकहकर अवरविद्यादेयकर गुरुजोहै सो
आकाशमार्गकेरस्ते चलेजाताभया सोजोदोऊभा
ताहैं अपनीविद्याग्रहणकरके सुवर्णकमललेक
रआकाशमार्गकेरस्ते वहजोहिमालयकेशिख
र ऊपरजो त्रिकूटपुरहै उसकोप्राप्तहोनेभये अशो
कदत्त अपनीजोस्त्रीहै उसराक्षसराजकीकन्या उ
सकेपास आवताभया वहजोराक्षसकन्याहै सो
भीशापसेछूटजातीभई विद्याधरीहोतीभई उसको
भीसाथलेकर दोईभाई काशीको आकाशमार्ग
करआवनेभये अपनेमातापिताकोप्रसन्नकरने^

उ कां. ३८

भये कैसे हैं माता पिता पुत्रों के वियोग कर बड़े दु-
खी हुये रहे अपना दर्शन रूप जो अमृत है उसके ब-
र्षा करणे वाले होते भये कैसे हैं पुत्र देहभेद बिना
ही जन्मांतरों को भजने वाले होते भये केवल माता
पिता को ही आनंद देने वाले नहीं होते भये किंतु
संपूर्ण लोकों के आनंद देने वाले होते भये विजयद
त्त माता पिता ने जो आलिंगन किया है उनों के भुजम
ध्य विषे प्राप्त हुये हुवे उनके मनोरथों को पूर्ण क
रता भया तदनंतर प्रतापमुकुट जो राजा अशोक
दत्त का श्वशुर है वह भी सुनकर उहां ही आ
वता भया बड़ी प्रसन्नता कर उसने सत्कार कर अ
पनी जो राजधानी है उसको ल्याईता भया कैसी है
राजधानी उत्कंठावली है अपनी प्रिया जिस विषे
स्वजनों संयुक्त बड़े उत्सव वाली राजधानी को प्राप्त
होता भया फेर राजे ने जो बहुत जो सुवर्ण कमल हैं
उनको देता भया राजा बड़ा प्रसन्न होता भया एक
की इच्छा करी थी अब अनेक सुवर्ण कमल प्राप्त
भये तदनंतर विजयदत्त को अपना पिता जो गोवि
स्वामी है सो सभ मनों के देखने कहता भया बड़े
आश्चर्य वाला हुवा हुवा है पुत्र निसदिन श्मशान वि
षे रात्रि के समय राक्षस भाव को प्राप्त जो हुवा तूं पे

रनेवाअग्नीनकाहुवा यहसंपूर्णीहमकोंकहो यहबा
तसुनकर विजयदत्तकेहूनाभया हेपिनाशी
जबचचलताकर देवयोगकर मैंनेकपालतोड़ा व
हांसेंनिकलीओवसाहै सोमेरेमुखमेंजबपड़ी तब
ही मैंराक्षसहोगया सोतुमनेदेखाहीथा मेरा
समायाकरमोहितहोगयाथा कपालस्फोट मेरा
उनोंराक्षसोंने नामधरा फेरउनोंहीराक्षसोंने मुझे
बुलायकरकहा हेकपालस्फोट तूंहमारेपासच
लेआवो फेरउनोंकेसाथमिलकर औरभीजो
राक्षसहैं उनोंनेमुझे अपनेराजेपासलिया सोजो
उनकाराजाथा नामकर लंबजिह्वथा उसनेजब
मुजेदेखा तोबड़ाप्रसन्नहूवा मेरेकों सेनापतीब
णावनाभया फेरकोईसमेंबीनेवहजोराक्षसरा
जहै सोमदकरके गंधर्वोंकेसाथ युद्धकरताको
जानाभया फेरउनोंगंधर्वोंने युद्धविखेंमारा तब
वहजोराक्षसहैं उनोंनेमेराहुकममाना मेरेकोंअ
पनाराजाबनाया फेर उसनगरविखें राक्षसोंका
राज्यकरताभया उहांहीअकस्मात् सुवर्णीकम
लोंकेनिमित्त धामजोहूवा मेराबड़ाभ्राता अशो
कदत्त उसकेदर्शनकर वहजोराक्षसदर्शाथी सो
निवृत्तभई तदनेनर जिसप्रकारहमकोंअपनीव

६ क. ३५

द्यां प्राप्त भई सो संपूर्ण मेरे भ्राता बड़ा जो अशोकदत्त
है सो तुमको सुनावेगा इस प्रकार जब विजयदत्त
ने कहा फेर अशोकदत्त संपूर्ण वार्ता मूल थें के
हता भया ऐसी विद्याधर थे दोनों भ्राता आकाश
मार्ग चलने चलते गालव ऋषी के आश्रम वि
खें मुनिकन्या गंगा विषें स्नान करती आइआं
हमने देखिआं सो कन्या भी अवर हम दोनों तु
ल्यही अभिलाषा वाले होते भये एकांत विखें
जाणे की इच्छा वाले होते भए यह बात उनके बंधु
वों ने जान ली था सो शाप देते भये कैसे है वह
दिव्य दृष्टि वाले क्या शाप दिया है पापाचार कर
णे वाले तुसी दोनों मनुष्य योनी विखें प्राप्त हो
वो हे पापी तुमारा भ्रातों का वहां मनुष्य योनी वि
खें भी वियोग होवेगा मनुष्य के अगम्य हूं देश
विखें प्राप्त हूवा जो छोटा है वहां ही जब बड़ा भा
ई प्राप्त होवेगा तब एक को देख दूसरा उस योनी
में छूटेगा फेर उहां ही तुमारा गुरु प्राप्त होवेगा
तब उस पासों तुमारे कों विद्या प्राप्त होवेंगि जो
तब शाप सें मुक्त हूवे हूवे अपने बंधू के साथ मि
लोगे हे पिताजी इस प्रकार मुनि जो ने शाप दि

प्राप्त्या सोहमनें नुमारेंचर जन्मलिया सोवियोग।
जिसप्रकारहूवा सोतुमकोंखबरहीहै तुमनें ग्रा
पहीदेखा ग्रबकमलनिमित्त सासकीसिद्धिसें रा
तसराजके नगरविषेंजायकर यह विजयदत्तनें
नेपाया उसीस्थानमें हमारागुरुमत्तप्तिकोशि
कनामवाला उससें हमको विद्याप्राप्तिभई फे
रउसीसमें विद्याधरहोगये इहांसें विद्याप्रभावक
रहमयुहांप्राप्तभये ग्रबउसशक्तिदेवको विस्मृश
मीजोभाईहै साकेहनाहै हे शक्तिदेव ग्रापसें
मृकुवाग्नवाजो ग्रशोकदत्तहै सोइसप्रकार माता
पिताकों केहकर माता पिताकोभी ग्रवर ग्राप
नित्रोजो दोनां स्त्रित्रोंहै उनकोग्रपनीजो विद्या
देताभया जिसविद्याकर तत्क्षणसोसभी विद्याध
रहोतेभए ग्रपनीजातीसभ यादकरनेभए नदनं
तर राजाकोंपूछकर भाईग्रवरमातापिता ग्रवर
दोनोंभार्यांकेसहित उडकर धन्यजो ग्रशोकदत्त
है सोग्राकाशमार्गकर चक्रवर्त्तीविद्याधरोंका
जोस्थानहै उसकोंवेगकर जाताभया वहांचक्र
वर्त्तीकी ग्राज्ञालेकर ग्रपनानाम ग्रशोकवेग
पायकर जयगिरि विजयदत्तकानाम देताभया

६ पा॰ ३९

महिन गोविंदकूट पर्वत जो अपना स्थान है वहां
प्राप्त होने भये सो राजा प्रतापमुकुट आश्चर्यवाना
हुवा हुवा अपना बनाया हुवा गो शिवजी का मंदिर
है उसमें जो दूसरा कलश है उसमें जो सुवर्ण कम
ल स्थापित करना भया अवर अष्टांके दन्न नदीये
हुवे जो सुवर्ण कमल है उनों कर शिवजी का पूज
न करना भया उसीके संबंध कर अपने कुलको
होना ऐसा मानना भया हे शक्तिवेग इस प्रकार दि
व्यों स्वरूप है कालान्तरकर इस मर्त्यलोक विषें
जन्म धारते हैं अपने सदृश ऐश्वर्य धारकर जो न
मनुष्यों को प्राप्त होने वाली जो सिद्धि है उनको
प्राप्त भी होते हैं जिसथें ये समस्त तू भी है क्यों
देवताओं का अंश है अब यह तेरा जो मनोरथ है
सो हे वेग कार्यों विषें जो उत्साह है दुष्कर कार्यों
विषें जो हठ है सो इसके हने है यह का ऐ देवांश है
अवर तेरी चाहना हुई जो राम कन्या कनकरेखा है
सो बालक है सो कनकपुरी देखने वाले पति को के
सा है इस प्रकार विस्मृदन्न सामों यह जो कथा है
वही मारस उसको सुनकर सो जो शक्तिदेव है के सा
है हृदय विषें कनकपुरी देखने को है अभिला
षा जिसको कथा श्रवण करके धैर्यवाला हुवा हुवा।

रात्रिव्यतीतकरताभया   इतितृतीयकथासमाप्ता ॥
॥ ४ ॥
जबरात्रिव्यतीतभई प्रभातसमें उसउत्पलद्वीपविषें
वहजोमल्लाहोंकाराजा सत्यव्रतहै सोउसमठविषें
शक्तिदेवकेपास आवताभया उसनेंपूर्वदिन प्रतिज्ञा
शक्तिदेवकेपास कीईहुईथी सोसत्यव्रतकेहताभया
हेब्राह्मणमैंनेतेरेवास्ते उपायचिंतनकियाहै समुद्र
केमध्यविषें रत्नकूटनामा एकद्वीपहै वहांसमुद्र
नेभगवानजीकीमूर्त्तिस्थापितकीईहूईहै आषाढ
शुक्लाद्वादशीकों वहांयात्राहोतीहै वहांसभनों
द्वीपोंके लोकयात्रावास्तेआवतेहैं तदकनकपुरी
द्वीपोंविषेंहोवेगी तबमलूमहोजावेगी तिसथेंहे
शक्तिदेव चलो वहतिथीनेडेआईहै मैंतमकोले
करचलूंगा मेरेजहाजविषेंबैठो ऐसेसत्यव्रतने
जबकहा शक्तिदेवमानलेताभया तदनंतर विस्तुश
मीने शक्तिदेवकेनिमित्त रस्तेकाखर्चपाईदीया त
बसत्यव्रतने जहाजल्याया उसजहाजके ऊपरसत्य
व्रतभीअवरशक्तिदेवभी बैठतेभए अवर समुद्रके
रस्तेचलतेभए चलतेचलते सत्यव्रतकों शक्तिदे
वपूछताभया हेसत्यव्रत यहजोबडाभयंकरसमु
द्रहै इसमेंदूरसें बडेशरीरवाला जैसेंपर्वतहोवे य
हक्याहै जैसेंपक्षोंवालापर्वतहोवे तदनंतर यहबा

पु. क. १८

मनुनकर सन्यब्रतकेंहनाभया हेशाक्तिदेव यहदेव
वटवृक्षहै इसमेंबडाआवर्तहै आवर्तजलकेफेरको
कैहतेहैं इसीकेहेठबड़वामुख अग्निहै इसजगा
कोछोड़कर जातेहैं इसआवर्तविषेंजोप्राप्तहोता
है उसकाफेरआवणानहीहोताहै यहमृत्युका
मुखहै यहवातीकहतेही वहजोजहाजहै सोजल
केवेगकर वड़वाग्निके सन्मुखजाना भया वहदेख
कर सन्यब्रत फेरशाक्तिदेवकों केहनाभया हेब्राह्म
ण साडाविनाशकालआगयाहै जोअकस्मात् ह
माराजहाज देख उधरहीकों दोड़ताहै मेनेबडेउ
पायकीयेहैं तथापि नहींअटकताहै अबमेरेसें
अटकनहींसकता यहजोबडाआवर्तहै जैसेमृत्यु
कामुखहोहैइसमें जलनेंखिचकर पायदियेहैं जैसें
पूर्वजन्मकाकर्म बडाबलवानहोवे यहमरणा
मुजेदुःखनहींहै किंतु शरीरकिसकास्थिरहै परं
तु यहदुःखमेरेकों बडाभाराहूवाहै जोमेरामनोरथ
बडे यत्नकरभीसिद्धनहींहोता परंतु मैंतुके एकबा
तकैहताहूं मैंइसवटवृक्षकेपास पलमात्र जहा
जकों खडाकरोंगा तावत् यहजोवटवृक्षकीशाखा
है जलकेसाथमिलीहुई इसकेऊपरतूं चढजाईं
कदाचित् तेरेजीवणेकाउपायहोजावे दैवयोगकर

नेराआकारबडाधारव्यवालाभासनाहै देवकेवि-
लास अवरसमुद्रकेतरंगोंका मनुष्यक्याजाने क्या
होताहै कदतरंगआवेगा इसीप्रकारदेवकीक्या-
खवरहै कथंचित् तुबचभीजावें इसप्रकार सत्य
व्रतकेकेहनेही जहाजहृदाकेनिकट आजाताभ
या कैसाहैसत्यव्रत बडेधैर्यवालाहै तावत् शक्ति
देवऊंचाहोकर वडीकाहलीसें वहजोहृदकीमो
टीशाहै उसपरचढजाताभया सत्यव्रतजोहै सो
देहसहित अवरजहाजसहित कैसाहै देहदूसरे
वास्ते कल्पितकीयाहूवा उसदेहसहित वडवा
ग्निविषेंप्रवेशकरताभया शक्तिदेवजोहै उसहृ-
दकीशाखा ऊपरचढाहूवाभी जीवनेसें निरा
शहूवाहूवा मनमेंचिंतनकरताभया हृदभीके
साहै अपनीशाखोकरपूरितकियाहै आशाजिस
ने आशाकहीयेदिशां क्याचिंतनकरताहै देखोमै
नेक्याकिया बुरेस्थानमें प्रवृत्तहोयाजोमेंहो मैने
यह कीवरोंकाराजाभीनष्टकरदिया अवरकैन
कपुरीजोदेखनीहारहै अवरनामभी श्रवणनहू
वा अथवाभविनव्यता कौनहरकरै कैसीहैभवि
तव्यता सभनोंके मस्तकविषे पददेनेहारीहै
इसप्रकारचिंतनकरताजो युवाब्राह्मणहै उस

उ. क. ३८
वृक्षके डाले ऊपर दिनव्यतीतहोनाभया सायंका
लजबहोणेलगा क्यादेखताहै चारोंतरफोंसेब
डेबडेगरुड़पक्षी उसवृक्षविषें अपने अपने आ
लयोंविषें प्रवेशकरतेजातेहैं कैसेहैंपक्षी शब्द
कर चारोंदिशा पूर्णकरतेहैं समुद्रका शब्दभीन
हींसुनाजाताहै उनकोंदेखताभया उनकेपक्षों
काजोपवनहै उसकरसमुद्रकियां बड़ीबड़ीलह
रों उठतीआंभईं मानोउनकेप्रेमकर समुद्रउ
नकोंआगेलेनेकोजाताहै तदनंतर शाखोंविषें
जबलीनहोतेभये तबउनकीमनुष्यबानीकर
बोलीसुननाभया मनुष्यजिह्वासें बातांकरते
थे वहशक्तिदेवसुननाभया कैसाहैशक्तिदेव
पक्षोंकेसमूहके हेठखड़ाहूवा सुनताहै क्याके
हतेहैं हेभाईतैंनेचोगचुगणेकोकहांगयाथा इ
सीप्रकार आपसमेंपूछतेभये उसमेंकोईदीपांत
र कोंकहताभया कोईपर्वतबतावताभया को
ईदिशांतरकोंकहताभया उसदिनके चरणेस्थानसु
नावनेभये एकउनोंमेंवृद्धगरुड़था वहबोलता
भया आजमेंफिरणेवासते कनकपुरीमेंगयाथा
सदैवभीमैंनेकनकपुरीकोजाणाहै उहांचरणचुग
णेवासते अच्छीमिलतीहै मेरेकोंदुःखदेणेवाला

जो इसगमनहै उसके साथमझे क्या प्रयोजनहै इस
थैंनेइसे जो कनकपुरीहै उसीको जाऊंगा यहबात
कैहकर सभीपक्षी अपने अपने स्थानमें सोनेको
जाकर सोवतेभये उसकाल वनकेमांहूवा जैसेअ
कस्मात् अमनकावर्षणाहोवे वहसुनकरशा
क्तिदेव विचारताभया कैसाहै शक्तिदेव उसपक्षी
केवचनकर हाहाहोगयासेतापजिसका क्याचिंतन
करनाहै आछीभई कनकपुरीनगरीभी सत्यही
है अवपरमेश्वरने इसीपक्षीको मेरेवाहनवास्ते
बनायाहै यहहीउपाय मुझेसमझायाहै मेरा
भार इसपक्षीको क्याहोगाहै इसप्रकारविचा
रकर सोयाहूवाजो वृद्धपक्षीहै उसकेपक्षोंपास
शनैःशनैःजायकर उसकेपरोंके ऊपरलेटापड
रैहताभया सवेरे वहजोपक्षीहैं सोअपने अपने
स्थानोंको छोड़कर उड़जानेभये सोजोवृद्धपक्षी
है आश्चर्यरूपीहैं पक्षजिसके सोमानोविधाता
ने पक्षपानबनायाहै ऐसाहै वहपक्षी शक्तिदे
वकोलेकर उड़जाताभया शक्तिदेव उसकेपक्षों
में छुपाहूवाहै क्षणमात्रथें उसकोलेकरकनक
पुरीकेबागविषेंप्राप्तहोताभया उसबागविषेंज
बवहपक्षीबैठताभया वहजोशक्तिदेवहै सोशनैः

६ कं॰ ३५

थाने छुपकर उसकी पीठ थी उमरनाभया उसगर पर्थी। भागकर बागविखें फिरनाभया उसवागमें दो इस्त्रियां उखों कों चुरानिजा देखनाभया शनैः शनैः उनके पास जानाभया वहभी केसी हैं मनुष्यके दर्शनकर आश्चर्यवाली हुई हैं वहशक्तिदेव उनकों पूछनाभया हे भद्रे यह कौनदेशा है इसका नाम क्या है अब तुम कौण हो यह पुष्प किसके वास्ते चुणनिजा हो वहओ स्त्रिजां है सो केहनी भई हे सखेय हपुरी विद्याधरों की है इसका नाम कनकपुरी है इसपुरी का राजा चंद्रप्रभा नामवाली विद्याधरी है उसकि जो हम बागवालिजां हो यह पुष्प उसी के निमित्त चुणनी हैं यह बात उस शक्तिदेव कों केहनी भई फेर वह शक्तिदेव उनकों केहनाभया हे कल्याणरूपवालियो एकमेरा भी मनोरथ करो ऐसें आजतमारी स्वामिनी कों मैं देखों यह बात सुनकर केहनी भई अच्छा चलहमारे साथ फेर उसकों अपने साथ नगर कों लेजानी भई उहां सें नगरी के मध्य विखें जो राजमंदिर है उसविखें लेजानी भई वह शक्तिदेव नगर कों देखना है सुवर्ण की कंयां लगी है मानों संपदों का यह मंदिर है जब वहां प्राप्त भया तब सारे लोक हैं चंद्रप्रभा नाई कहने भए मनुष्य का आ

गमन आश्चर्यरूप चंद्रप्रभाभी सुनकर देवतीवालोंको
केहतीभई शानावी उसमनुष्यको मेरेपासल्यावो व
ह उसकोलेजानेभये जायकर शक्तिदेव उसचंद्रप्र-
भा विद्याधरीको देखताभया कैसीहै वह चंद्रप्रभा
नेत्रोंको आनंददेणेहारी है मूर्ती जिसकी मानोवि
धाताका जो रूपबणावणेकी चतुराई संपूर्णहोग
ई काइसथेंपरे औरसुंदररूप नहीबणायसके व
ह चंद्रप्रभाभी उसकोदूरसेंही देखकर रत्नपलंघ
से उठतीभई उसके देखणेकरवशहूईहूई स्वागत
कर शक्तिदेवका आदरकरतीभई फेरउसीपलंघके
ऊपर विठायकर पूछतीभई हेकल्याणमूर्ति तूं
ऐसासुंदर कोणहै और इसमनुष्यागम्यभूमीवि
षें कैसेंप्राप्तहूवाहैं इसप्रकार चंद्रप्रभाने जबकह्या
तब शक्तिदेव अपना देश और आपना कुल अपा
ना नामभी सुणावताभया और जैसें पुरीके देखने
के बहाने राजकन्या जो कनकरेखा है उसको प्राप्त
होणे वास्ते मत्स्यके ऊदरमें रहा प्राप्तहूवाहों यह सं
पूर्णवर्णनकरताभया तदनंतर चंद्रप्रभा जो है सो
यहबात समझकर बडा श्वासलेकर ध्यानकर शा
क्तिदेवको एकांत लेजायकर कैहतीभई हे सोभा
ग्यवाले इसपृथ्वीकाराजा शशिखंडनाम विद्याध

हैं उसकि जो चारकन्या उत्पन्न हो तिन्जो मेंजो उन
मैंबडीकानाम चंद्रप्रभाहै दूसरीकानाम चंद्ररेखा
था तीसरीकानाम शशिरेखाथा चौथीकानामश
शिप्रभाथा सोचारहीकन्या पिताके घरवड्डोंकोप्रा
प्तहोतीभेजो एकदिनमे तिन्जो तीनोभगिनी गं
गाजीके तटविखें स्नानकरणेकोजातीभई मैंनो
कन्याव्रत करणेमें लगीहूई थी मेरेविनां जातीभ
जो गंगाविखेंन्हायकर जलक्रीडाकरनेलगिजो
वहांअत्रयनयानाम एक ऋषी स्नानकरताथा उ
सकोयुवावस्थाके अहंकारकर जलोंकरकेसिंचन
करतीभई वह केसाथा जलविखें खडाहूवा संध्या
वंदनकरताहा उसनें तनकोहटायाभी तदभीव
डेहठकरसिंचनकरतीरही तिसकर ऋनीक्रो
धीहूवाहूवा शापदेताभया क्याहेकु कन्यो तुम
मनुष्यलोकविखें उत्पन्नहो विद्याधरलोकला
यकतुमनहीं हो यहशापसाडेपितानेश्रवणकि
या केरहमारापिता उसऋषीकेपासरण प्राप्तहोता
भया कन्याकेशापांतकेवास्ते तदनंतरवहऋषी
प्रसन्नहोकर तीनोंकाभिन्नभिन्नशापांतकरताभ
या अवरकृपाकरकेजातिस्मरत्वभी उनकोदेता
भया दिव्यज्ञानसहितक्यामनुष्यलोकविखेंभी

तुमारेकों अपनीजाती ज्ञानसहितरहेगी तिसथें
उपरांत वहजोकन्याहैं सोशरीरत्यागकर मनुष्य
लोकविखें प्राप्तहोगई तदनंतर हमाराजोपिता
है सोइसनगरीकाराज्य मुजेदेयकर वनकों त
पकरणेवास्ते कन्याकेदुःखसें चलेगयाहै फेर
मेंजोइसनगरी विखें रहणेलगी एकदिन मेरे
कों सुपनेविखें देवीभगवतीकेहतीभई क्याके
हतीभई हेपुत्रि तेराभर्ता मनुष्यहोवेगा तदनंत
र मेरेवरणेकेनिमित्त बडेबडेविद्याधरआवनेभये
उनोंकोमेरापिता देनेलगातो मेंनेवहनहीमाने
पिताकीआज्ञाभीनहीमानी सोमेंकन्याहीआज
तलकरही अवयहजो तेराआश्चर्यरूप आवणा
है इसकर अवरयहजो तेरासुंदरशरीररहे इस
नेभी मेरेकोंवशकरके तेरेकोंहीअर्पणकिया
है तिसथेंहेशक्तिदेव आगेआवनेवालीजोचन्द्र
दशीहै उसविखेंमेंपिताकेपासजावोंगी तेरेनि
मित्त विज्ञप्तिकरणेवास्ते ऋषभजोमहांपर्वतहै
उहांउस चन्द्रदशीविखें सभविद्याधर नानादिशां
येंशिवजीकीपूजाकरणेकेनिमित्त आवतेहैं तर
सेवासमपति मेरापिताभी उहांअवश्य आवताहै
उसकीआज्ञालेकर मेंशताबीआवोंगी तदनंतर

उ
क॰
४१

मुझेविवाहिनकरले यहबानउसको एकांतवि
तें केहकर फेरकेहतीभई हेशक्तिदेव चलोमेरे
मंदिरमें स्नानादिक अवरभोजनादिककरो यह
बानकेहकर विद्याधरलोकोंकेयोग्यजोपदार्थहैं
उनोंकर उसशक्तिदेवकीसेवाकरतीभई अबक
बीकेहताहै शक्तिदेवको उहांकेसा अपूर्वसुख
ऊवा जैसेंवनकी अग्निकर तपाऊवाहोवे उस
कोंजैसें अमृतसमुद्रकीप्राप्तीहोवे उसकेस्नान
सें जैसेआनंदहोवे तैसाहीउसकोऊवा फेरवह
चतुर्दशीजबप्राप्तभई तबचंद्रप्रभा शक्तिदेवको
केहतीभई हेशक्तिदेव आजमें तेरेनिमित्त पिता
कीविज्ञप्ति करणेकोंजावोंगी सारेपरिवारसहित
तैनेयहदोदिन दुःखनहीकरणा इकलेरहणाअर
एकबानसुन यहांरेहनेतैने मध्यकेमंदिरकीभू
मीनहीदेखणी क्याइसमंदिरके मध्यकाजोमंदि
रहै उसमेंनहीजाणा यहबानकेहकर जातीभई
चित्तसेंतो उसकेपासहीरेहतीहै मानोशक्तिदेव
काचित्तभीउसीकेसाथगया तदनंतर वहजोश
क्तिदेवहै सोचित्तकोंरमाणेवास्ते उनोंघरोंमेंफि
रताभया कैसेहैंवहमंदिर मानोसंपदाकेघरहैं
फिरतेफिरते उसकेमनमेंयहबानआवतीभई।

मैरेको चंद्रप्रभाने किसवास्ते निषेधकिया मध्य
केमंदिरनहींजाणा इसबातसें वहमध्यकेमंदि
रकोंभीखोलनाभया मनुष्योंकायहस्वभावही
है जिसबातकोहटाइये सोईबातकरणी जबउ
समंदिरके ऊपरचढा क्यादेखताहै तीनकोठ
डियां आश्चर्यरूपबणीहुईहै उसमेंएककोठडी
कादर्वाजाखोला क्यादेखताहै एकरत्नकेपलं
गऊपररूईकेलेफविखें एकस्त्रीसोईहुईहै उस
केमुखसें वस्त्रउठावताभया क्यादेखताहै वह
जोपरोपकारीराजेकीकन्या कनकरेखासोईहुई
है यहबातदेखकरमनमेंचिंतनकरताभया यह
क्याबडाआश्चर्यहै क्यायहजाणकरसोईहुईहै
अथवामुजेभ्रांतीहुईहै जिसकेनिमित्तमुजे इतना
परदेशचलनापडा अबरपनामजेदुःखहुवाहै
सोतोइहांसोईहुईहै परंतइहां इसकेप्राणनही
है उहांतोयहजीवतीहै मुख इसकामरणेवाले
सरीखानहीहै कोतीमुखकी इसकीगईभईन
हींहै यहमुकेविधाताने ऊछइंद्रजालरचाहै
इसप्रकारचिंतनकर दूसरी जोदो कोठडी है उ
नकोखोलनाभया उहांभी इसीप्रकार सोईहुई
दोकन्याकोदेखताभया बडेआश्चर्यवालाहुवा

हूवा उहांसेनिकलकर उसमंदिरकेनीचे एक
वापीबडी उन्नमदेखनाभया वापीकहोबावडी
उसकेकनारे रत्नोंकेजीनवालाघोडाबांधाहूवा
देखनाभया उसकोंदेखकर उसमंदिरकेनीचे
उतरनाभया घोडेकेपास उसकोंदेखकर चढ
नेकीइछाकरनाभया यावत् उसकेपैरोंकारस्सा
खोलनाथा तावत् उसघोडेने लातमारकरउ
सीबावडीविखें सुटदिया जबबावडीविखेंडू
बा ततक्षण उसीवर्धमाननगरविखें जोराजे
काबाग उसमेंजोबावडीथी उसमेंनिकलता
भया बडेसंभ्रमसें क्यादेखताहै अपनीजोजन्म
भूमीहै उसमेंराजेकेबागकी बावडीविखें ख
डाहूवा आपकोंदेखताभया आपकोंकुमदजो
हैंनाहूपे उनकेसदृशदेखताभया कैसेहैंनाहू
पे चंद्रमाकीप्रभाकेविना जैसें वहनहीशोभ
ने नैसेही चंद्रप्रभाविद्याधरीविना कुमदोंके
सदृशदेखताभया मनमेंचिंतनकरताहै क्याक
होयहवर्धमानपुरी अवरकहांविद्याधरोंकीपु
री अहोबडाआश्चर्यहै क्यामायाकाचरित्रहूवा
है अहोबडादुःखहूवा किसीदैवने मंदभाग्य
जोमेंहां सोठगलियाहूं फेरमनमेंकेहताभया

खबरनहीहै क्याभावीहै यहकोनजाणताहै
यहवार्ताचिंतनकरताहुवा बावडीकेजलसैं
निकलकर अपनेमातापिताके घरकों आ
वताभया आश्चर्यवालाहुवाहुवा क्यारलेच
लते बहुजोनगाराहै ढंडोरेका उसकोंसुनता
है मातापिताने आनंदकर आदरकियाहै ए
कदोदिन अपनेबंधुवोसहित घरमेंरहताभया
दूसरेदिन घरमेंजबबाहर मेलकरणेकोनिक
सा तबफेरउोहीनगारा वहुहीश्लोकढंडोरेवि
षेंसुनताभया विप्रक्षात्रियमध्यात्कनकपुरी
येनतत्वेनोदृष्टा वक्तुसतस्मैततयांसयोवराज्यं
ददातिनृपः १ अर्थ ब्राह्मण अथवाक्षत्रियहो
वे जिसनेकनकपुरी सत्यकरदेखीहोवे सोक
हो उसताईराजा यौवराज्यसहित कन्याकोदे
ताहै यहसुनक उउडीवालेजोपुरुषहै उनकों
शक्तिदेवकेहनाभया मैंनेकनकपुरीदेखीहै
यहसुनकर उनोनेराजापासलेजाईनाभया
फेरराजाने उसकोपछाना वहहीझूठगलाने
वालाब्राह्मणहै जदशक्तिदेवनेजाना राजाम
केझूठाजाणताहै फेरराजेकों शक्तिदेवकैह
नाभया हेराजन् जबमेंफेरझूठकहें मेनेन।

उ
क.
६१

गरीदाबीहै तबमुजेशरीरका निग्रहकरणा नि
ग्रहकहीमारणा आजमुजेराजकन्याशके मेंक
हूंगा जबयहप्रतिज्ञाशक्तिदेवनेंकरी तबराजा
कन्याको बुलावनाभया जबकनकरेखानेवह
देखा तबपिताकोकेहतीभई हेपिताजीयह
वहहीब्राह्मणहै फेरभीकछुपूछकहेगा यह
वार्ताशक्तिदेवसुनकर राजकन्याकोंकेहताभ
या हेकनकरेखे जोमेंसत्यकेहताहूं जोमेंझू
ठकेहताहूं यहबातमुजेसुनादे मेरेकोइसबा
तीका आश्चर्यहै क्यामेंनेंहूं कनकपुरीमेंरत्न
पलंघके ऊपरमूईहुईदेखीहै इहांतेरेकोजीव
तीदेखताहूं यहवार्तामुजेसुना यहक्याहै ज
बशक्तिदेवने पनेपूर्वककहा तबराजकन्यापिता
केसन्मुखयहवार्ताकेहतीभई हेपिताजी यह
तोमहात्माहै इसनेकनकपुरीदेखीहै सत्यकर
याहैचिरसें उहांहीमेराभर्त्तायहहोवेगा उसीपुरी
विखे मेरीतीनभगिनीयांहै उनकोंभी यहही
विवाहेगा चारोंभगिनी असीइसीयों भार्याहोवं
गिआं उसीपुरीविखें विद्याधरोंकाराज्यकरेगा
मोआबयहजावे मेंनेआजहीअपनेशरीरसेप्रा
महोना अवरपुरीविखेंभीआजहीप्रवेशाकरणा

है हे पिताजी ऋषीके शापसें मैंनेन्हसाडेयरज
न्मलिया है यह मेरा शापांत ऋषीने कहा हुवा
था जब कोई मनुष्य कनकपुरी विषें तेरे कों दे
खकर तेरा पड़दा खोलेगा क्या पड़दा है उहां तूं
मूई हुई है यहां तूं जीवती कैसे है जैसें इस ब्राह्म
णनें कहा है तब तेरा शाप दूर होजावेगा यह
शापांत करके फेर मुनी कहता भया मनुष्य
योनी विषें तूं जातिस्मरा अवर दिव्यज्ञानवती हो
वेंगी हे पिताजी तिसथें मैं अपने विद्याधरपदवी
प्राप्त होणेकों जावेंगी यह बात कहकर सो जो
राजपुत्री है सो शरीरकों त्यागकर चलेजाती भई
उस राजमंदिर विखें बड़ा भयंकर रोणेका शब्द हो
ताभया शक्तिदेव जो है सो उभय तौ भ्रष्ट होता
भया बड़े क्लेशोंकर कनकपुरीको प्राप्त होकर भी
भ्रष्ट होता भया उनों दोइ स्त्रियांका ध्यान करकर
परम दुःखको प्राप्त होता भया अपने आत्माकों नि
दा करता है कैसा है नहीं प्राप्त भया मनोरथ जिस
का राजमंदिरसें बाहर निकलकर तणमात्र मन
में चिंतन करता भया क्या चिंतन करता है मैं किस
निमित्त रोता हूं जो भावी होणी है सो तौ कनकरेखा
के हुगई है फेर मैं किस वास्ते दुःख करता हों सिद्धि

उ॰ कां॰ ८८

जोहोतीहै सोधैर्यके अवरहठके आधीनहोती
यांहै जिसमार्गकर आगेमैंजाताभया उसीमार्ग
करफेरजाऊंगा फेरभीदैव अवश्यउपायकरे
गा जैसेंदैवने आदिविखैंउपायकिया तैसेंही
फेरभीउपायकरेगा ऐसेंविचारकर फेरउसीर
स्तेजातोभया फेरवहसमुद्रके किनारेकेऊप
र विटंकपुरनाम जो नगरथा जहांआदिविखैं
प्राप्तहूवाथा तिसीविटंकपुरको प्राप्तहोताभ
या वहांवहीजोशाहूकारथा जिसकेसाथ ज
हाजविखैंचढाथा सोईशाहूकार उसकेसन्मु
खआवताभया उसकोदेखकर शक्तिदेवमन
विखैंविचारताभया क्यावहीसमुद्रदत्तमेरासंगी
है यहतोसमुद्रविखैंपडाथा यहसमुद्रसें कैसें
निकसा फेरमनमैंकरताभया मैंभीसमुद्रवि
खैं मछीनेनिगलाथा जैसेंमैंबचा तैसेंही कि
सीकारणसें यहभीबचाहोवेगा इसमैंतो मेरा
हीदृष्टान्तहै यहविचारकर यावत् उसकेपास
शक्तिदेव जाताईथा तावत् उसने शक्तिदेवपहि
छानलीया उठकरकंठकेसाथलगाईताभया
फेरबडेआदरकर उसशक्तिदेवको अपनेघर
ल्यावताभया भोजननानाप्रकारके उसको

भोजनकरावताभया फेरउसकोंपूछताभया।
हेशक्तिदेव जवजहाजटूटा तूंसमुद्रसें कैसेंनि
कसा तदनंतरशक्तिदेवभी आपनावृत्तांतसंपूर्ण
जैसेमछलीनेग्रासकिया अवरउराकेद्वारा उत्स्थ
लद्वीपकोंप्राप्तहूवाहों तिसकेउपरांत उससमु
द्रदत्तकोंभीपूछताभया हेसमुद्रदत्ततूंकैसें समु
द्रसेंबचा अवरनिकसाकैसें तदमुजेकहो फेर
वहसमुद्रदत्त शक्तिदेवकोंकैहताभया हेशक्ति
देव जदमेंसमुद्रमेंगिरा तवएकजहाजकात
ख्ता मुजेहाथलगा तीनदिनउसीतख्तेकेऊपरसमु
द्रमेंभ्रमतारहा फेरउसीरस्तेएकजहाजआवतामें
नेदेखा मेंउसकोंदेखकर वडाशोरकरताभया मे
राआक्रंदसुनकर वहजहाजकोंल्यावतेभये मुजे
उसजहाजकेऊपर चढालेतेभये जवमेंजहाजके
ऊपरचढा वहांआपनेपिताकोंदेखताभया वहमे
रापिताद्वीपांतरकों गयाहूवाथा चिरकालमें
अवघरकोंआवताथा उसीकाजहाजवहथा सो
जोमेरापिताहे मुजेपहिचानकर मेरेकोंअपने।
कंठकेसाथलगावताभया रोवते रोवतेमुजेपूछ
ताभया क्यातूंसमुद्रमेंकैसेंपडा फेरमेंआपनेपि
ताकोंकैहताभया हेपिताजी आपकोंगयेहूवे

उ
कं
८५

चिरकालतकबहूवा तबमैंनेविचारा हमव्यवहा-
रीहैं हमनेंव्यवहारहीकरणा यहविचारकर मैं
आपहीव्यवहारविषें प्रवृत्तहोताभया फेरमैंही
पोतरजाणोंकी इछाकर जहाजके ऊपरचढ़ता
भया सोजहाजपवनसैंटूटगया मैंसमुद्रमैंगि
डा आजतलकतीनदिनभये सोमुजेआजतुम
नेबचायाहै हेब्राह्मण जबइसप्रकारमेरावच-
नसुना तबमेरापिता उपालंभसहित उपालंभ
कहेउलामा मुजेकैंहताभया हेपुत्र ऐसेप्राण
संशयकरणेंहारे जोजहाजहैं उनकेऊपरतूंकि
सनिमित्तचढ़ताहैं मेरेपासधनबहुतहै मैंतेरेवा
स्तेधनसंग्रहकरणेंकोंलगाहूवाहूं देखमैंने तेरे
वास्ते यहजहाजसुवर्णाकरपूर्णतल्पायाहै हेमि
त्रइसप्रकारमेरेकों आश्वासनकरके अपनाजर
जोहै विटंकपुरविखें वहांसेचलेआयेहां यहवार्त्ता
उससमुद्रदत्तसें सुनकर अवरतीनदिनउनकेघरमें
विश्रामकर फेरउससमुद्रदत्तकोंकेंहताभया हे
सार्थवाह मैंनेफेर उत्स्थूलद्वीपकों जानाहै सो
मैं अबकिसप्रकारजावों यहबातसुनेतूंकेंहू
दे बहुनोसार्थवाहहै सोशक्तिदवकोकेंताभया
हेशक्तिदेव मेरेगमारते उत्स्थूलद्वीपकोजाणे

वास्तेनयारहै सोतूभी उनकेसाथ जहाजके ऊपर
चढकरजावो जबउससमुद्रदत्तनेकहा तबउ
सके मनुष्यांकेसाथ द्वीपकोजाताभया फेरउ
सद्वीपविषें प्राप्तहोताभया जायकर बजारकेर
स्तेचलनेलगा तावत् देवकर उससत्यव्रतराजा
केजोपुत्रहैं उनोंनेंचलतादेखा उनोंनेंपछाना
पछानकरकेकहतेभये हेब्राह्मण तुंहमारेपिताके
साथकनकपुरीढूंढनेवास्ते गयाथा सोतूएक
लाकेसेंआया शक्तिदेवउनकोंकेहताभया तु
मारापिता वडवाग्निविखें पड़ाहै जोरसेंसमुद्र
काजल जहाजकों खेंचकरलेगया वडवाग्निके
वडवाग्निकेमुखमेंडालदियाहै मेरेको उसनेबचा
यलीया यहबातकीवरोंके राजेकेजोपुत्रहैं सो
सुनकर अपनेचाकरोंकोकेहतेभये इसदुष्टकों
बांधलेवो इसीनेंहमारापितामाराहै यहबातनही
वेतो केसेंएकजहाजमें चढेहुवेदोऊमनुष्य उनों
मेंएकवडवाग्निविखेंपडे अवरहूसएवहांसेंबचकर
निकसआवे तिसथें यहहमारेपिताकों मारणेवा
लाहै इसकोप्रभातसमेमें चंडिकादेवीके वली
केनिमित्तकरदेवो बांधके उसीदेवीकेमंदिरवि
खेंराखो जब उसराजेके पुत्रोंनेकहा तबवहजोमु

उ कु॰ ४९

त्यहैसोशक्तिदेवकोबांधकर चंडिकादेवीके मंदि
रकोलेजातेभये कैसाहै उसचंडिकादेवीकामंदि
र बडेभयकोदेनेवालाहै मानों मृत्युकाखुला
हुवामुखहै अनेकखायेजोजीवहैं सोईउसकाउ
दरहै बडीबांधीजोघंटाहै सोईमानों दांतोंकी
पंक्तिहै उसीमंदिरमें शक्तिदेवकोबांधकर कैद
करतेभये शक्तिदेवजोहैबांधाहूवा सोअपनेजी
वनकेसंशयवालाहोताभया जीवनकीआशा
कों त्यागताभया तदनंतर यहमनमेंकरताभया
यहजोदेवीभगवतीहै यहहीरक्षाकरणेहारी
है इसीकीशरणप्राप्तहोवों यहविचारकरके भग
वतीकीस्तुतिपूर्वक विज्ञप्तिकरताभया श्लोकदो
ऊ बालार्कबिंबनिभया भगवतिमूर्त्यापरित्रा
तम् निर्भरपीतप्रविसृतरुरुदानवकंठरुधिर
येवजगत् १ तन्मांसततप्रणतंनिष्कारणविधु
रवर्गहस्तगतम् रक्षस्वसुहृद्रागतमिष्टजनप्रा
प्तिस्पृयावरदे २ इसकाअर्थ हेभगवति तेरी
मूर्तीनेजगत् रक्षाकरीदीहै कैसीहैतेरीमूर्त्ती
बालार्ककाजोबिंब उसकेसदृशहै फेरकैसीहैते
रीमूर्त्ती तृप्तहोकरपिया अवरमारेगिराया है रुरु
नामदैत्यके कंठका रुधिरजिसनें इसप्रकार

कीजोनेरीलालरंगवालीमूर्त्तीहै उसीकरसारे ज
गत् कीरक्षाकरतीहै उसीमूर्त्तीके मेभीशरण
प्राप्तहुवाहों केसाहुं निरन्तरतेरीभक्तीवालाहूं
फेरकेसाहुं कारणविनाही शत्रूकेवशपडाहूं
हेभगवति मेरीरक्षाकरो केसाहुं हूंमार्गचल
करआयाहूं प्रेमवालेजनकीरक्षाकर इसप्रका
रस्तुतीकरनाभया तदनंतर उसशक्तिदेवकों
बडेदुःखकर कछुकनिद्राआवतीभई स्वप्नमें
क्यादेखताहै उसीदेवीकेमंदिरसें प्रकटहूईहै
ऐसीएकस्त्रीकोंदेखताभया सोदृष्टीकृपाकर उस
कों कहतीभई हेशक्तिदेव तूंमतभयकर तेरेकों
अनिष्टनहोवेगा जोमैंकहतीहों सोतैनेकरणा
क्या यहजोधीवरोंकेराजेके घरहै इनकीभगि
नीनामकरबिंदुमतीहै सोप्रभातविषें तेरेकों
देखनेवास्ते आवेगी फेरतुजेदेखकर पतिभाव
करवेंगी सोतूंमानलेई वहहीतुझकों छुडावेगी
सोवतूंकहैं धीवरोंकीकन्याकों केसेवरूं सोतं
सुन वहधीवरोंकीकन्यानहीहै वहदिव्यस्त्रीहै
शापकरगिरीहूईहै यहबातसुनकर जागउठा
क्यादेखताहै प्रभातसमें वहधीवरोंकीकन्या
आवतीभई केसीहैवह शक्तिदेवके नेत्रोंकी

मानों अमृतलहरी है सो देवी मंदिर विषे आवती भ
ई इस शक्तिदेव के पास आयकर प्रीती वाली होती
भई बडी उत्कंठापूर्वक इस शक्तिदेवको कैती भई
क्या के हती भई मैंने जे कहा थी गी मेरा मनोरथ ने
पूर्णकर क्या मेरा जो पिता अवरभ्राता है उनों कुं पा
समेरे कों वरणे हारे वहुत आये थे मैंने सभ कों ज
बाव दीया मैंने विवाह नहीं करणा अब दैवयोग
कर तनें देखकर मुजे विवाहकी इछा हूई है तिस
थें विवाह कर मुजे तुं भज इस प्रकार तब बिंदुमती
की वरी की भगिने कहा तब शक्ति देव सुमे कों याद
कर प्रसन्न होकर के मानले ना भया के इस कों वि
वाहना भया कैसी कै वह स्वमविखें भगवती की आ
ज्ञाकर अवर बधुवों ने दी ई हूई अवर भार्यों ने अनु
वकी या है तिसका उस कों पायकर सुखकर रेह
ना भया मानो पुरुषों कर प्राप्त हूई जे मैं सिद्धी होवे
मानो पूर्वजन्म की सिद्धी प्रगट भई ऐसी उसकों प्राप्त
भई फेर एकसमय विखें शक्तिदेव अपने मंदिर के
ऊपर बैठा हूवा देखना भया एक चांडाल रस्ते में च
लता है कैसा है गोमांस का भार लिया हूवा जिस
ने उसकों देखकर वह जो अपनी भार्या है उस कों
के हना भया हे कृशोदरि यह जो गोऊ है कैसी है

तीनजगतकीपूजाकरणेलायकहै देखयहपापी उनकामांसखानाहै कैसायहपापीहै यहबानीय तीकीहनकरके वहजोविंद्रुमतीहै सोअपनेप तीकोकेहनीभई हेआर्यपुत्र यहपापबडाहै य हकहणेमें चिंतनकरणेमेंनहीं आवताहै क्या कैहणा इसपापकादेखो गौवोंके थोडेही अप राधकरमेंकीवरोचरजन्मऊवा अवरउनीकेप्रसा दकर राजघरमेंजन्मीहों इसचंडालकीक्यागं तीहोवेगी जबविंद्रुमतीनें यहबातीकही तब शक्तिदेवउसको पूछनाभया हेप्रियेबडाआश्च र्यहैनेसुनायाहै सोतूमुजेकहदे तूकोनहै अ वरकीवरोकेचरजन्मकेसेहूवा वहविंद्रुमती नहीजबकेती तबशक्तिदेव बडेहठकर पूछने लगा फेरवहकीवरीकेहनीभई यहबातजानेला यकनहीं एकबातमेंतुजे केहनीहो सोतूमानेतो मेंइसबातको कहोंगी शक्तिदेव केहनेलगा हेप्रि येजोतूकहेंगी सोमेंमानोंगा उसनेसुगंधकरा यलई सोविंद्रुमती शक्तिदेवको केहनीभई आ दियहमनोरथ मेरेको यहांहोणाहै सोतूसुन इ सीहीपृथिवि मेंमेरीभार्याअवरभी होवेगी हेआ र्यपुत्र सोतेरीभार्या थोडेहीदिनोंमें गर्भधारेगी

उ
क:
४८

तब अम सासहोवेगा गर्भकों तबतेने उसकेगर्भ
सें खेंचकर बहार ल्यावणा दयाकरणीनहीं जब
यहबातसुनी मनमें शंकितेवकरनाभया यह
क्याकहा। इसविंडुमनीने वडेआश्चर्यसहितहो
नाभया तबउसकी वरीनेजाना इसकोचूणआ
ईहै यहबातजानकर फेरकेहनीभई हेआर्यपु
त्र तैनेचूणानहींकरणीचाहिये किसीकारणक
र यहमेरीबात तैने अवश्यकरणी अबतूसुन
मेंनेपूर्वजन्मविखेंथी अबरजिसकरकीवरोंके
घरमेंजनमहूवा हेभर्ता मेंजन्मांतरविखें विद्या
धरीथी विद्याधरपुरीविखें शोधकर मनुष्यलो
कविखें प्राप्तहूईहां। विद्याधरलोकसें भ्रष्टहूईह
हूई उसीविद्याधरलोकविखें मेंदेवीभगवती
केआगे वीणा वजावती थी सो उहांतंतवीणा
की टूटी जबवहतंतूटूटी तबमेंदांतोंकर तंतू
कोकाटकर उसवीणाविखें जोडतीभई वहतं
तूसुकीहुई गौकीनाडीकीथी वहसुकाचर्म
मेरेदांतोंकेसाथ स्पर्शहूवा उसीपापसेंकीवरों
केघरमें जन्महूवा यहतोस्पर्शमात्रकर ऐसी।
अयोगनीहोई फेरइनके मांसभक्षणकर अयो
गनीक्या कैहणाहै यहबातकेहनीथी तावत्

उसकीवरीकाआता आयकरशान्तिदेवकों संभ्रमप्र
वेककैहनाभया हेशान्तिदेव तुमइहांसेउठखडे
हो औरजगाविखेंवैठो एकसूकर बडाआश्चर्य ५४
रूपवालाहै उसनेबहुतमनुष्यमारेहै सोसूकर
अवइथरआवनाहै बहुतनगरभीउसनेगिडायेहैं तु
मोतुमइहांनरहो जबयहबानशान्तिदेवनेंसुनी आ
पनेमंदिरसें हेठउतरकर घोडेऊपरचढकर उस
सूकरकेपीछेदौडनाभया कैसाहै शान्तिदेव बडा
शूरवीरहै उससूकरकोंदेखकर बाणकरकेप्रहार
करनाभया अवरनेजेकरकेभी प्रहारकरनाभया अ
वरउससूकरकेपीछेदौडजानाईया नावन वहसू
कर भागनाभया घायलहूवाहूवा भमता भाग
ना एकपर्वतकीगुफाविखें बडगया शान्तिदेवभी
उसकों ढूंढणेवास्ते गुफाविखेंप्रवेशकरनाभया ज
बउसगुफाविखें प्रवेशकीया क्यादेखताहै उस
विखें बडाबाग अवरमंदिरपडेहूवे बहुतसारे बीचसें
खुलाआकाशभासताहै उहांजायकरएककन्या ब
डीअछुत उसकोंदेखताभया कैसीहैवहकन्या भय
करके शान्तिदेवकेपासआईहै मानोंवनदेवताआ
ईहै उसकन्याकोंशान्तिदेवपूछताभया तूंकौणहैं
किसकीकन्याहैं अवरतूंजेभयकिसथेंआयाहूवा

है यहबातीसुनकर वहजोसुनावीहै सोकेहती
दु. क. ४९ भई हेवीर दक्षिणदिशाकाराजा चंडविक्रमनामहै
जिसकीबिंदुरेखानाम मेंकन्याहूं हेसुभग अक
स्मात् यह ज्वलितलोचननामवालादैत्य आजछल
करकेमुझे पिताकेघरसें लेआया बडापापीथा
सोआजहीमुझे यहांछोडकर मांसकेनिमित्तस
रकाउपायारकर बाहिरगयाथा कथाकरकेपी
छिनहूवाहूवा सोकिसीवीरनें बर्छीकरअवरबा
णकर घायलकीयाहूवा भागताहूवा इहांअपने
गरहमें आवताहीमरगयाहै मैंभागकरउहांसें
निकसआईहों कैंसीहोंमें कन्याभावजिसकाहू
षितनहीहूवाहै फेरशक्तिदेव उसकन्याकोकेह
ताभया फेरतजेकजाभयहै हेराजपुत्रि वहजोसक
रथा सोमैंनेंहीबर्छीकर माराहै जबयहबातीसनी
तबवहराजपुत्री शक्तिदेवकोपूछतीभई हेवीरतेम
जेकहो तूंकोणहैं यहबातसुनकर शक्तिदेवकेह
ताभया हेराजपुत्रिमेंशक्तिदेवनाम ब्राह्मणहों य
हकेहताभया तबवहराजकन्या शक्तिदेवकोंकेह
तीभई हेवीरतूंमनुष्यनहींहैं तूंकोईदेवताहै ति
सथेंमेरापती नहींहै जबउसनेंयहबातकही त
बशक्तिदेवनेंमानलई फेरउसराजकन्याकोलेकर

उसगुफासेंबाहिरनिकसनाभया फेरवहविखेंजा
यकर अपनीजोभार्याविंडुमतीहै उसनाईसाथाह
ज्ञांमसुनावनाभया उसनेमानलिया उपरंतअच्छा
दिनदेखकर वहजोराजपुत्रीविंदुरेखाहे उसकों
विवाहनाभया जिसदिनथों शक्तिदेवदोऊभार्या
वालाहोयकर रैहणेलगा फेरकोईदिनपीछेवह
जोविंदुरेखानाम भार्याशक्तिदेवकीथी सोसगर्भा
होनीभई जबअष्टममासकागर्भहूवा तबवहजो
विंदुमतीपेहलीस्त्रीहे सोएकांतविखेंआयकर
शक्तिदेवकोंकेहनीभई हेभर्त्ता तूंविंदुरेखाका उद
रपाडकर गर्भउसकानिकासल्यावो मेरेसाथमे
प्रतिज्ञाकीईहूईहे सोतमनेअन्यथानहींकरणी
मेरावचनअसत्यनहींकरणा यहविंदुमतीकावचन
सुनकर शक्तिदेवकृपाकर अबरप्रतिज्ञाकर व्याकु
लहोनाभया मनमेंविचारमाहे बडाआश्चर्यहै स्त्री
काउदरपाटनकरणा अबरमैंने इसकेसाथप्रतिज्ञा
भीकरीहूईहै इसबातमें उत्तरकछभीनहीदेनाभ
या नीचांमुखकरबेठनाभया फेरमनमेंदुःखीहूवा
हूवा उहांसेंउठकर विंदुरेखाकेपासजानाभया
विंदुरेखाजोहैसोभी भर्त्ताकोंदुःखीऊवेकोंदेखकर
केहनीभई हेआर्यपुत्र आपकाजदुःखीकिसकारण

ध्रु क. ५.

मैंहो फेरयापहीकेहनीभई हेभर्त्तः मैंजाननीहों मजेइसकीवरीनेकहाहोगा मेरेगर्भकेनिकास नेवास्ते सो हे आर्यपुत्र मैंने अवश्यकरणाहोवेगा उसवार्त्तामें आठकार्यसिद्धिहै इसवार्त्तामेंजोक ठोरताहै भ्रूणहत्यारूपी सोनजेनहींहोवेगी नि मर्थेनंतुम्हणानहीकरहे माघइसवार्त्ताविषें देव दत्तकीकथासुनों मैंतमकोंसुनावतीहों ॥

अथचतुर्थकथाप्रारंभः

हेभर्त्ताजी कंथलनामनगरविषें एकहरिदत्तनामाब्रा ह्मणहोताभया वहब्राह्मणधनवालाथा उसका पुत्रदेवदत्तनामकरहोताभया कैसाथावहदेवदत्त विद्याभीपढाहूवाथा नथापि जूवेकाव्यसनीहो ताभया कैसाथायुवावस्थाकरभराहूवा अवरसें दाथा एकदिनजूवेविषें भूषणवस्त्रादिकसभी हारदेताभया अवभयसें अवरलज्जासेंभी पितामाता केपासजाणेकोनहींसमर्थहोताभया उहांसेंभा गजाताभया फेरवनविषेंएकतपस्वी जालपादना मवालाथा उसकोंदेखताभया कैसाहै जालपाद साधितकीयेहै अनेककार्यजिसनें अवरत्रएक

रताहै अवरमहांव्रतधारणेहाराहै तदनंतर उसके
पास शनैः शनै जाताभया जायकर उसजालपाद त
पस्वीकोप्रणामकरताभया वहजोजालपादहै उ
सनेभीमौनत्यागकर आशीर्वादकरकेप्रसन्नकरी
ताभया फेरक्षणमात्रदेवदत्तउहांखडाहीरेहताभ
या फेरउसजालपादनेदेखा क्याउसकाचित्तस्वस्थ
नहींहै कछुदुःखीमालूमपडताहै यहबातमनमें
विचारकर उसदेवदत्तकोंदुःखकाकारणपूछता
भया फेरवहजोदेवदत्तहै सोसंपूर्णअपनीजोवि
पदाहै उसकोसुनावताभया कैसीहैविपदा व्य
सनकरकेक्षीणजोहूवाधन उसथेंउत्पन्नहूईहै
यहबातसुनकर वहजोजालपादहै सोदेवदत्तको
केहताभया हेपुत्रतूंसुन जोद्यूतकेव्यसनीहोते
है उनोंकोंसारीपृथ्वीकाजोधनहै सोभीपूरानहीं
होताहै जोतेरीइछाहोवविपदाकेदूरकरणेकी
तबमेराजोवचनहै सोतूंकर तेरीविपदादूरहोवेगी
मेंनेविद्याधरपदवी प्राप्तहोणेकेनिमित्त उद्यमधा
राहूवाहै जिसथेंतूंसवकोंत्यागकर मेरेपासबैठक
र तूंभीउसमंत्रका आराधनकर मेरीआज्ञापाल
नकर तेरीजोजोविपदाहै सोदूरहोवेगीजो ज
बउसब्रतीने यहबातकही तबवहजोदेवदत्तहै

६ उसनेभीमानलयी वहबातद्यूतके त्यागनेकीभीप्र
क॰ तिज्ञाकरताभया तिसदिनयोंलेकर उसीकेपासरै
५१ हताभया फेरदूसरेदिन जालपाद देवदत्तकेसहित
रात्रिसमयमें श्मशानकों जायकर वटवृक्षकेनीचे
पूजाकरताभया पायसकानैवेद्यदेताभया आठ
हीदिशांविखें कालीकोंदेयकर पूजनकोंसमाप्त
करके पासजोदेवदत्तहै उसकोंकैहताभया है
देवदत्त तेनेंभी इसीप्रकार इहांआयकरके नित्य
हीपूजाकरणी पूजाकेपीछे यहबाततैनेकेहणी
हेविद्यत्प्रभे पूजांग्रहण यहकैहकरचलेआव
णा उपरंतमेंआपहीजाणोंगा सिद्धिअवश्य आ
सांदोनोंकोंहोवेगी यहबातकेहकर जालपाद
अवरदेवदत्त अपनीजगाविखेंआवतेभये उपरं
तवहजोदेवदत्तहै सोनित्यउहांजायकर तिसी
प्रकारपूजनकरताभया तदनंतर कोईदिनपाछे
एकदिनपूजाकरणेंकों देवदत्तगयाया पूजाकर
केजब अरजाणेकोंतयारहूवा उससमेंक्यादेख
ताहै वहवटकावृक्ष चीराहूवा मालूमपडा उ
हांसेंएकदिव्यस्त्री निकसी वहदिव्यस्त्रीकेहती
भई हेभद्रमेरेसाथचलेआवो साडीजोस्वामिनी
है सोतजेबुलावतीहै उपरंतवहजोदेवदत्तहै

सोउसकेसाथजानाभया वहस्त्री उसदेवदत्तको उसगृ
हकेभीतर प्रवेशकरावतीभई सोदेवदत्त उसमें क्या
देखताहै मणिमयदिव्यचरवणाहूवा उसगृहमें
दिव्यपलंघविछाहूवाहै उसकेऊपर एकदिव्यस्त्री
वैठीहूईहै यहमनमेंध्यानकरता यहसाक्षीसिद्धी
रूपधारकर आईहैक्या यावत्चिंतनकरताईथाता
वत् वहस्त्री उसकावडाआदरकरतीभई भूषणशब्द
करनेहैं मानोंदेवदत्तकोस्वागतकरतेहैं फेरवहस्त्री
पर्यंकसें उठखडीहूई उसदेवदत्तको अपनेपलंघके
ऊपरविठावतीभई अवरयहकेहतीभई हेसुभग र
त्नवर्धनामएकयक्षहै उसकीकन्यामेंहों विद्युत्प्र
भामेरानामहै यहजोजालपादब्रतीहै सोमेराआरा
धनकरताहै सोउसकोंमैं धनमात्रहीदेणाहै अवर
तूंजोहै सोमेरेकोंप्राणोंसेंभीअधिकप्रियहै तूंमेरा
प्रभुहैं मैंतेरेकोदेखतेही अनुरागवालीहोईहों ति
सथेंमेरापाणिग्रहणकर जबउसदिव्यस्त्रीनें ऐसेक
हा तबदेवदत्त उसकापाणिग्रहण करताभया को
ईसमय उसमायामंदिरमें रेहताभया फेरएकदिन
उसकोंपूछकर उसजालपादकेपास आवताभया
उसकेसाथआवणेकी प्रतिज्ञाकरके फेरजालपाद
कोंभयसहित संपूर्णवृत्तांतसुणावताभया सोजा॰

वि॰ लपाद अपणे प्रयोजनकों सिद्ध करया चाहता है १
क॰ फेर उसकों केहना भया हे भद्र अच्छा किया तेनें तू
५२ फेर उसके पास जा मेरे पास भी आवनें रे हणा जबते
रा उसकों गर्भ रहेगा तबतेनें मेरे कों खबर करणी जो
मैं कहोंगा सो तेनें करणा यह बात केह कर देवदत्त कों
उस यक्षिणी के पास भेजता भया देवदत्त फेर उस यक्षि
णी के पास जाता भया उहां उस अर्जुन मंदिर में यक्षिणी
सहित रेहता भया फेर कों ई दिन पीछें उस यक्षिणी
का गर्भ होता भया जब अष्टम मास चढा तब देवदत्त
जालपाद के पास आवता भया गर्भ की बात भी सुना
वता भया फेर जालपाद सुन कर देवदत्त कों केहता
भया हे देवदत्त तू जाय कर उस यक्षिणी का पेट फा
डकर गर्भ उसका लै ई आवो फेर मेरे कों भी अवरते
रे कों भी सिद्धी होवेगी तेरी विपदा संपूर्ण दूर हो जावे
गी यह बात सुन कर उस यक्षिणी के पास जाता भया
या वत उहां वेठा अवर जालपाद ने जो कहा है गर्भ
का काटना उसकर मन में बडा दुःखी हूवा हूवा है
तावत यह विद्युत्प्रभा नाम जो यक्षिणी है सो आप
ही केहती भई हे आर्यपुत्र तम किस वास्ते दुःखी हो
मैं ने मैं जान लिया है तेरे कों जालपाद नें मेरे गर्भ के का
ढने के निमित्त कहा होवेगा तू इस बात में दुःख नही कर

मेराउदरपाड़कर गर्भमेराकाढ़के इसकेमलहूकारणहै
मेरेप्राणोंनहीहोसकेतो मेंआपहीउदरकोंपाड़कर ग
र्भकोंनिकासदेवोंगी यहबातसुनकरभी उसकामन
नहीकरताभया तबवहपद्मिणी अपनाउदर आप
पाटनकरतीभई गर्भकोंनिकासकर देवदत्तके आ
गेधरकर देवदत्तकोंकेतीभई स्वामीं इहजोगर्भहै इ
सकोंजोखावे सोविद्याधरहोवे यहगर्भविद्याधरता
काकारणहै इसकोंतूंग्रहणकर मेंनेविद्याधरीथी
शापकरयहदेहपानीविखें प्राप्तभई ऐसाहीमेरेकों
शापांतथा मेंअबतीजातनकों स्मरणकरतीहों अब
मेंअपणेविद्याधरलोककों जावोंगी उहांहीतेरा
मेरासंगहोवेगा यहबातकेहकर वहजोविद्याध
भार्या सोअदृश्यहोकर चलीजातीभई वहजोदेवद
त्तहैसो उसगर्भकोंलेकर जालपादकेपास आवताभ
या बडादुःखीहोयाहुवा उसगर्भकों जालपादकोंदे
ताभया कैसाहै वहगर्भ सिद्धीकोंदेनेहाराहै ऐसेग
र्भकों जालपादकोंदेताभया कविकेहताहै सोजो
पुरुषहै सोदुर्लभवस्तुभीप्राप्तिहोवे तथापि अपना
हीपेटनहीभरतेहैं वहजोव्रतीजालपादहै सोउस
गर्भकोंचावलपायकरे तावडीविखें चढायदेता
भया सीकनेवास्ते वहधूर्तजोजालपादहै सोदेवद
त्तकोंछलकरावणेवास्तेकेहताभया हेदेवदत्त तूं
श्मशानविखेंजायकर भैरवजीकोंबलीदेयआवो व

उ० क० ५३

हुनोसाथदेवदत्तहै सोपूजाकेनिमित्त श्मशानको
जाताभया यावत् पूजाकरकेदेवदत्त आवताहीथा
क्यादेखताहै उसजालपादने वहसंपूर्णमांसभक्ष
णकरलिया देवदत्तकेवास्ते थोडाभीनहींरखा फे
रदेवदत्त उसकोंकेहणेलगा तेंनेमेरेवास्ते थोडाभी
नहींरखा यहतेंनेमेरेसाथ छलकीयाहै यावत्
कैहताहीथा तावत् वहकपटीजो जालपादहै
सो खड्गहाथमेंलेकर आकाशकोंउडजाताभ
या आकाशकेसदृश खड्गहाथमेंलियाहुवा
श्मशानियोंके घायेहुवे भोंवटेपायेहुवे ऐसाशो
भताहुवा उडताभया जदवह आकाशकोंउडग
या तबदेवदत्तचिंतनकरताभया बडाकष्टहै इस
पापबुद्धिजालपादने मुजेठगलियाहै फेरकेह
ताहै अत्यंतनमीयाहोणाजोहै सोकिसकोंनहींदुः
खकाकारणहोवे सोमेअबइसनेकीयाजोछलहै
इसकाबदलाकैसेंकरूं वहतोविद्याधरहुवाहै न
आपिविद्याधरहोयकोंभी कैसेप्राप्तहोवें यहवा
तीमनमेंविचारताभया फेरउसकेमनमें यहवा
तीआवतीभई वेतालसाधनविना अवरउपाय
कोईनहींहै वहहीउपायहै विद्याधरलोकविषे
प्राप्तहोणेका मेरेकोंगन्नतेवेतालसाधनमंत्रबता
याहुवाहै उसीकीकृपाकर वेतालसिद्धहोय
जावेगा इसप्रकारनिश्चयकरके रात्रीकेसमयमें

स्मशानकों जानाभया वहांएकमनुष्यफांसीलगा
हूवाद्रक्षकेसाथ लटकताथा उसकोंउतारकर उ
सीमंडपविखे वेतालकाआवाहनकरताभया प्रस
नकरके मनुष्यमांसकरके बलीदेताभया अव
रुधिरकरके तर्पणकरताभया जबउसमनुष्य
मांसकर तृप्तनहींहोताभया अवरऔरद्रव्यणोकी
सामर्थनहींहोतीभई तबबडेधैर्यवालाजोहै दे
वदत्त सोअपनेमांस काटनेको आरंभकरताभया
उसीक्षणविषेंप्रसन्नहूवाजोवेतालहै सोकेहता
भया हेदेवदत्त तेरेधैर्यकरमेंबडाप्रसन्नहूवाहों
अबतूं अपनेमांसकाटनेका हठनकर मेंतृप्तहो
गयाहों मेंहठकर हेभद्र तेराक्यामनोरथहै उस
कोंमेंसाधदेवोंगा तेकहदे जबयहबातवेताल
नेकही तबबहजोवीरहै देवदत्त सोकेहताभया
हेमहाराजवेतालजी वहठगजोहै विस्वासघा
तीजालपादब्रती विद्याधरलोकविषें उहांउसके
दंडकरणोकेनिमित्त मुजेलेजावो फेरवेतालके
हताभया अछामेंसेहीकरोंगा यहबातकेहकर
उसकोंअपनेमूंठकेऊपरचढायके आकाश
मार्गकर विद्याधरलोककों जाताभया उहांजायक
रउसजालपादकों मंदिरकेऊपर सिंहासनमेंबै
ठेहूवेकोंदेखताभया केसाहै वहजालपाद स्त्री

उ॰ कु॰ ५४

के सिंहासनके ऊपर बैठा हूवा विद्याधरराज्यपदकौ।
कौं भोगता है अव विद्याधरनाके बलकरके उसी वि
द्युत्प्रभा विद्याधरीकौं मनारणकरता है वहू नहीं इ
च्छाकरती है उसके पास जाणेकौं उसकौं वारंवार
विद्याधरलोकोंकौं भेजता है लावणेके वास्ते कै
हता है तूं मेरी स्त्री हो वहू नहीं मानती है यहू वात
देखकर वहू वेताल देवदत्तसहितही उसकै पक
डनेवास्ते दौडताभया कैसा है वहू देवदत्त प्रसन्न
हूई जो विद्युत्प्रभारूपी चकोरी उसके नेत्रोंका आ
नन्दरूपी चंद्रमा है फेर वहू जो जालपाद है सोआ
कस्मात् देवदत्तकौं वेतालसहित आयेहूवेकौं
देखकर भयवालाहूवाहूवा आसनसैंगिडप
ताभया खड्गबीगिडताभया पृथ्वीके ऊपर उसी
समयमें देवदत्तनें खड्ग उठालिया खड्गलेक
रभी उसकौं हीमारताभया कोंइक छे ऐसेवैरीकौं
वेंगों नहीमारताभया उसविखैं शास्त्रकारके हता
है वडेधैर्यवाले अवरस्वच्छजो पुरुष हैं सोभयस
हितजो शत्रु हैं उनोंविखैंभी दयावालेही होते हैं
फेर वेताल उसके मारणेवास्ते उठताभया उसवे
तालकौंभी हटावताभया हटायकर यहू वचन कै
हताभया हे वेतालजी पाखंडीजो यहू जालपाद है
गरीव इसकेमारणेकर हमारे कोंवडाफल है जिस

थें इसकों उठायलेजावो जहांइसका आश्रमहै उ
हींपुजादेवो यह जोकापालिक है पापी केरभी उ
हांहीरहो जबऐसेंदेवदत्तकेंहमाहीया नबदेवी
दुर्गाभगवती प्रत्यक्षहोतीभई सोभगवती दे
वदत्तकोकेहतीभई हेदेवदत्त इसतेरेधैर्यकर
मैंवडीप्रसन्नहूईहों जिसथें विद्याधरोंकातूं रा
जाहो इसीजगातूंविद्याधरोंका राज्यकर यह
वरदेयकर विद्याधरोंकीजोविद्याहैं सोभगवती
देवदत्तकों देयकर छपजातीभई ज्ञालपादकों
वेतालउठायलेजाताभया उसीजगामें पुजायदि
या कैसाहै जालपाद हरहोगईहै खड्गसिद्धीजि
सकी अधर्मकरके जोसिद्धीहै सोचिरकालनहीं
रैहतीहै सोजोदेवदत्तहै विद्युत्प्रभा विद्याधरी
केसहित आनंदकरके विद्याधरोंकाराज्यकरता
भया भगवतीकेवरकरके यहकथाविंदुरेखा श
क्तिदेवकों केहकर फेरवचन शक्तिदेवकोंकेह
तीभई कैसीहै विंदुरेखा बडे मीठेवचनकेंएोहा
री हेआर्यपुत्र इसीप्रकार कारणअनेकहोतेहैं
जिसथेंविंदुमतीनेंजो मेरागर्भका पाटनकह्याहै
सोतूंमेरेउदरकों पाडकर गर्भकोंनिकासले शो
ककोंत्यागकर इसप्रकार जबविंदुरेखानेकहा

६ तथापि शक्तिदेव पापसें डरता भया इतनेमें आका-
क. शवाणी होतीभई क्याहै शक्तिदेव शंकाकों त्यागक
५५ र इसकेगर्भकों निकासले उदरकोपाटनकरके
जबउसगर्भकों कंठविषेंपकडेंगा
उसीसमयमें वहतेरेकों सिद्धीदेनेवाला खड्गहो
जावेगा इसप्रकारदिव्यवानीसुनकर शक्तिदेव
उसविंदुरेखाके उदरकोंपाटनकरके उसगर्भकों
कंठविषें पकडताईथा तावत्‌वहजोगर्भहै सोख
ड्गहोकर उसकेहाथमें प्राप्तहोताभया मानौं-
खड्गनहीहै सिद्धीकाकेशपाशखैंचाहै तत्‌क्ष
णवहजो शक्तिदेवहै सोविद्याधरहोजाताभया
विंदुरेखाभी अदर्शनको प्राप्तहोजातीभई यहवा
तदेखकर शक्तिदेवजोहैसो उहांसेंजायकर वह
जो कीवरकीकन्या विंदुमतीहै उसकोसंपूर्ण
इसवार्ताकोंसुनावताभया फेरवहजोविंदुमती
है दूसरीस्त्री सोसुनकर यहबात शक्तिदेवजो
अपना पतीहै उसकोंसुनावतीभई हेनाथ असी
तीनोंभगिनी विद्याधरोंकी जोपुरीहै उहांसेंशाप
करके गिरियांथियां शशिखंडनामजो विद्याध
रोंकाराजाहै उसकियां कन्यांहै एकतोकनकरे
खाथी वर्धमाननगरविषें परोपकारीराजेकीक-

त्या उसका प्राणांत भी नैनें मैत्रीसें देखनेंही करदिया
सो आपनी पुरीको चलेगए उसकाशरीरांत ऐसाही
था दैवयोगकरके दूसरी विंदुरेखा राजकन्या जो
मैंनें विवाहीथी उसका प्राणांत यहही था उदरया
टनकरणा वहभी कनकपुरीकों जावेगी मेराभी
प्राणांत प्राप्तहूवाहै मैं तीसरी हों ऐसीतीनों म
नुष्यलोक विषें भी ज्ञानवान थियां मैंनेंभी आज
ही अपनी पुरीकों जाणाहै हमारे शरीर उहांस्थि
तहैं उहांही चंद्रप्रभानाम साडीभगिनी सभनोंसें
बडी उहांहीहै अबतूंसीभी खड्गसिद्धीके प्रभा
वकरके उहांहीचलो हमाराजोपिताहै अपुत्र
सो चारहीजोभगिनीहै हमारेकों तेरेकोंविवाहदे
वेगा अवरकनकपुरीकाजोराज्यहै सोभी तुजेदे
वेगा फेरउसपुरीकातूं राज्यकरेंगा जबविंदुमती
ने परमार्थकेंहदीया तबउसीविंदुमतीसहित आ
काशमार्गकरके कनकपुरीकोंजाताभया उहांजा
यकर देखताभया वहजोनिर्जीव शरीरतीनदेखे
थे उनोंमेंतीनों प्रवेशकरतीभई जबशक्तिदेव
उहां प्राप्तहूवा वहतीनों चरणोविखें प्रणामक
रतीकोंदेखताभया अवरबडीजोचंद्रप्रभाहै उ
सकोंभीदेखताभया कैसीहै रचितकियाहैसंग
लजिसने बडेचिरकालकीजोउत्कंठाहै उसकर

दे.
क.
५९

के मानों शक्तिदेवका जो चंद्रमामुख है उसकों चको
रीरूप जो दृष्टी है उसकरके पान करनी है सब उहांके
जो स्त्रीलोक है सो शक्तिदेवका जो आद्यासमान है
उसविषें लगती भई बडा आनंद होताभया शक्ति
देवकों आपने रहणेवाला जो ग्रह है उहां प्राप्तक
रायकर चंद्रप्रभा कहती भई हे सुभग जो तैंने वर्ध
माननगरविषें कनकरेखानाम राजकन्या देखी थी
सो यह मेरी भगिनी चंद्ररेखानामकरके है जो उत्प
लद्वीपविषें कोवरनामकी कन्या विंदुमतीनामतैं
नें विवाही थी सो यह मेरी भगिनी शशिरेखानामक
रके है अवर जो तैनें विंदुरेखानाम राजकन्या अ
रकों मारकर विवाही थी सो यह शशिप्रभा नामके
र मेरी छोटी भगिनी है हे पुण्यवान अबतुमहमारे
सहित हमारेपिताके पास चलो सो हमारा पिता त
मकों चारहीकन्याकों विवाह देवेगा फेरतुम हमा
रेकों विवाहो इसप्रकार जब चंद्रप्रभाने कहा मानो
यह वचन कामदेव जो राजा है उसकी आज्ञा है उस
वचनकों सुनकर चारोंभार्यायोंके सहित शक्तिदेव उ
स शशिखंड विद्याधरराजेके पास जाताभया व
केनपावनविषें तदनंतर संपूर्णवार्त्ताकन्योंने पिता
कों सुनाई उसीसमयविषें आकाशवानीभी होती
भई हे शशिखंड यह जो शक्तिदेव है उसकों तैनें

कन्यां कोंभी विदा करता भया अपने जामा
तकों राज्य देय कर आपतपो बन विखें
ही रेहता भया तदनंतर शक्तिवेग जोहैसो
राजाहोय कर कनकपुरी विखें प्रवेश कर
ता भया अपनी स्त्रियों सहित कैसी है नग
री विद्याधर लोककी वैजयंती है फेर तिस
पुरी विखें चारों स्त्रियों सहित बडे सुंदर जो
बाग हैं उनों में फिरता हुवा परम आनंद भो
गता भया कैसी है कनकपुरी सुवर्णकि
यों रचनों कर शोभ मान हैं मंदिर जिस वि
खें अत्यंत ऊची होणे कर मानों सूर्यका
जो तेज है सो एक पिंड होकर स्थित हूवा हू
वा है अवर बडी सुंदर जो बावलिआं हैं उ
नों विखें आनंद भोगता भया इस प्रकार व
हजो शक्ति वेग विद्याधर है सो अपना ही
चरित्र सुनाकर बडा जो चतुर है शक्तिवेग
सो फेर वत्स राजकों कहता भया हे चंद्रवं
शके भूषण वत्सराज मेरे कों शक्तिवेग कों

चारोकन्या विवाहदेनीत्रा इसकिजो द्वीज
न्मकित्रों स्त्रीत्रोहेन् उसदिव्यवानीनेभी
प्रेरित कियाऊवा प्रसन्नहोकर विद्याधर
राजाजोहैसो उनोंचारों कान्याकों एकस
मयमेंही शक्तिदेवताई विवाहदेताभया
ग्रवर वहजो कनकपुरीका राज्यहै उस
कोंभी जामानाकों देताभया ग्रवर ग्रप
नीजो विद्यासंपूर्णहै सोभी देताभया ।
फेर वहजो बडाभाग्यवान शक्तिदेवहै
उसकों विद्याधरोंके योग्यजो नामहै सो
राखताभया शक्तिवेग करके कहताभ
या फेर यह बात्ती कहताभया ग्रोरकोई
शत्रूभी तुजे नही जीतेगा मेरे प्रभावसें
फेर वत्सराजकापुत्र नरवाहन दत्त चक्रव
र्त्तीहोवेगा उसके ग्रागे तैनें हाजर रेहणा
इतनी बातों कहकर शशिखंडनाम जो
विद्याधर राजाहै सोशक्तिवेगकों बिदाकर
ता भया तपोवनसें सत्कार करके उनों

ण तुमारे पास आयाहों आगे होगाजो
द्यापरोंका चक्रवर्ती तेरा पुत्र इसके चर
ोंके दर्शनकी इछावालाथा सोमेंने दर्श
किया है तैनें मुजे पूछाथा तू मनुष्य हो
र विद्याधर कैसें हूवा सोमेंने तेरे नांई क
ऐसे मनुष्य होकर विद्याधरता मेंनें
शिवजीके प्रसादकर पाईहै हेराजन् वत्स
राज मेंअपने स्थानकों जावोंगा अपनाजो
प्रभुहै सोमेंनें देखाहै तुमारेकों सदाही
कल्याण शिवजीदेवे यहबात अंजली बांध
कर केहताभया फेर वत्सराजसें आज्ञालेक
र वहजोशक्तिवेगहै सोक्षणमात्रसें आ
काशकों उडगयाहै कैसाहै शक्तिवेग चं
द्रमा सदृशहै कांती जिसकी फेर महा राजा
वत्सराजजोहैसो यहदेखकर दोनोदेवीस
हित अवर अपनाजो बालकहै नरवाहन
उससहित अवर अपने जोमंत्रीहै उनों
परम आनंद मयजो दशाहै उसकों

उ
क.
५८

प्राप्तहोता भया ॐ इदं गुरुगिरींद्रजा प्रण
यमंदरांदोलनात् पुराकिलकथाम्
नेहरत्नखो बुधेरुद्धृतम् प्रसह्य
रसायंनिये विगतविघ्नलब्धं
यो पुरंदयति वैबुधी भुवि
भवप्रसादेन ते १ इति
चतुर्दारिकालंबके
तृतीयस्तरंगः स
समाप्तिमगा
त् ॥

ॐ

शुभमस्तु लेखकपाठकयोः यह कथाकी
भाषा श्री श्री श्री पंडित रघुनाथजीकी आज्ञा
कर श्री पंडित कृष्णजीने सरित्सागरसे निका
लकर भाषा बनाई लोकोंके विलासके वा
स्ते बनी है ॥
संवत्
१९२२

प